ओ३म्

# सत्यार्थ सौरभ

मासिक

जून-२०१७

जून-२०१७ ◆ वर्ष ६ ◆ अंक ०१ ◆ उदयपुर

**श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास**

नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ६६

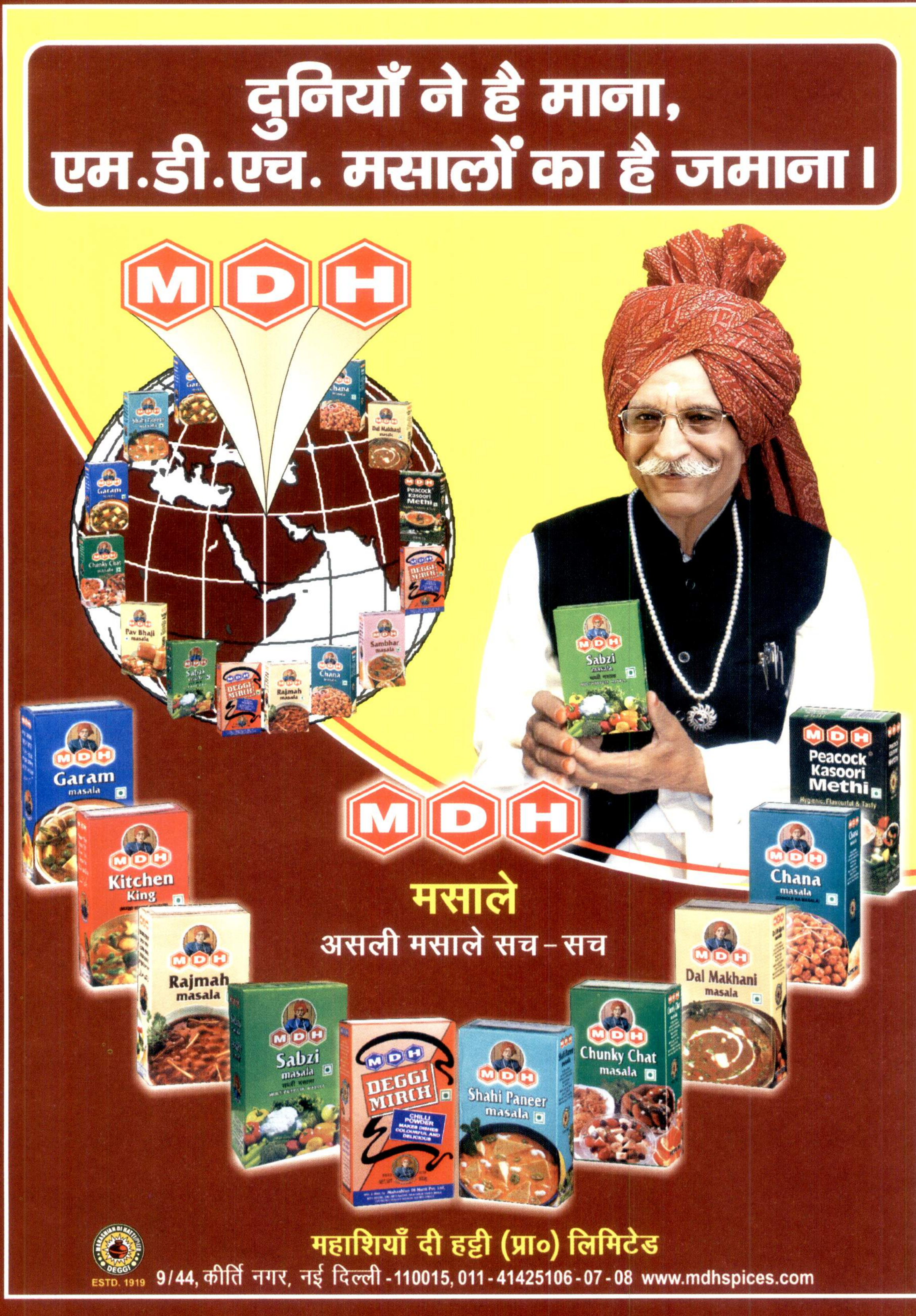
दुनियाँ ने है माना,
एम.डी.एच. मसालों का है जमाना।
MDH
MDH
मसाले
असली मसाले सच - सच
Garam masala
Kitchen King
Rajmah masala
Sabzi masala
DEGGI MIRCH
Shahi Paneer masala
Chunky Chat masala
Dal Makhani masala
Chana masala
Peacock Kasoori Methi
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015, 011 - 41425106 - 07 - 08 www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

# सत्यार्थ सौरभ


**प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ**

महाशय धर्मपाल जी ( एम.डी.एच. )
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी ( अमेरिका )

**परामर्शदाता संपादक मण्डल**

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

**सम्पादक**

अशोक आर्य

**प्रबन्ध सम्पादक**

भवानी दास आर्य

**प्रबन्ध सहयोग**

नवनीत आर्य ( मो.9314535379 )

**व्यवस्थापक**

सुरेश पाटोदी ( मो.9829063110 )


| सहयोग ◆ भारत | विदेश |
|---|---|
| संरक्षक - ११००० रु. | $ 1000 |
| आजीवन - १००० रु. | $ 250 |
| पंचवर्षीय - ४०० रु. | $ 100 |
| वार्षिक - १०० रु. | $ 25 |
| एक प्रति - १० रु. | $ 5 |

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११८
ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्दशी
विक्रम संवत्
२०७४
दयानन्दाब्द
१९३


सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।


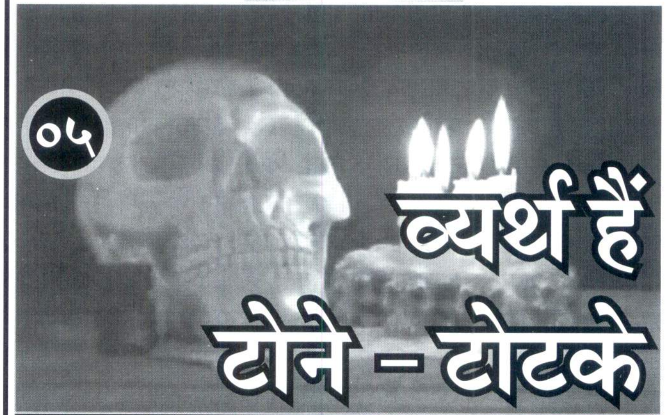

**June - 2017**


विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन
३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

| | |
|---|---|
| पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | २००० रु. |
| आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | १००० रु. |
| चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | ७५० रु. |



समाचार २६

हलचल २७

०४ वेद सुधा
०७ श्राद्ध और तर्पण का वैदिक स्वरूप
०९ अंधविश्वास और हम
१२ खिसियानी बिल्ली........
१३ धन कमाने का वास्तविक महत्व
१४ 'स्वास्तिक' शब्द का विश्वभ्रमण
१५ सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०६/१७
१६ जीवन में संस्कारों का महत्व
१८ ब्राह्मणग्रन्थ वेद नहीं हैं
१९ वाणी का महत्व
२४ प्रेरणा- फौलादी इरादे
२५ अयोध्या में ऋग्वेदादिभाष्य स्मारक
२८ स्वास्थ्य- टमाटर के फायदे
२९ कथा सरित- अनासक्ति
३० सत्यार्थ पीयूष- राजकोष-प्रबन्धन



**स्वामी** श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

**वर्ष - ६ अंक - ०१**

**मुद्रण** द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.)
११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

**प्रकाशक**
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

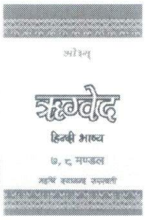


# वेद सुधा

**ओ३म् भद्रं भद्रं न आ भरेषमूर्जं शतक्रतो। यदिन्द्र मृडयासि नः।।** - सामवेद १७३

अन्वयः- शतक्रतो इन्द्र! नः भद्रं भद्रं इषम् ऊर्जम् आ भर यत् नः मृडयासि।

अन्वयार्थः- (शतक्रतो!) हे सैकड़ों प्रकार के कर्मों को करने वाले परमेश्वर! (नः भद्रं भद्रं इषम् ऊर्जम् आभर) तू हमें सुखकारी एवं कल्याणकारी अन्न और रस प्रदान कर वा प्राप्त करा (यत् इन्द्र नः मृडयासि) क्योंकि हे परमेश्वर! तू तो हमें सुखी ही करता है।

हे प्रभो! तू शतक्रतु है, बहुविध प्रजाओं वाला है बहुविध कर्मों वाला है। हे परमात्मन्! जब हम तेरे अद्वितीय ज्ञान वेद का स्वाध्याय करते हैं तो उस में नाना प्रकार के ज्ञान, विज्ञान और प्रज्ञान हमें देखने को मिलते हैं। जैसे कहीं भूगर्भ विज्ञान है, कहीं खगोल विज्ञान है, कहीं ज्योति विज्ञान है, कहीं सृष्टिविज्ञान है, कहीं मनोविज्ञान है, कहीं शरीरविज्ञान है, कहीं अध्यात्मविज्ञान है, कहीं चिकित्सा विज्ञान है, कहीं औषधि विज्ञान है, कहीं शल्यचिकित्सा है, कहीं अग्नि विज्ञान है, कहीं विद्युत् विज्ञान है, कहीं यज्ञ विज्ञान है, कहीं कृषि विषय है, कहीं गणित विषय है, कहीं अर्थ विषय है, कहीं शब्द-ज्ञान है, कहीं व्युत्पति विज्ञान है। इसी प्रकार जैसे तेरे अद्वितीय ज्ञान वेद में नाना प्रकार का ज्ञान-विज्ञान भरा हुआ है वैसे ही तू बहु कर्मों वाला भी है। सारे संसार में नाना प्रकार के तेरे कर्म-कार्य हमें दिखाई देते हैं। यह सर्य-चन्द्र, यह अग्नि-विद्युत्, यह धरती-आकाश, ये जल-वायु, ये नाना प्रकार के अन्न आदि खाद्य एवं दुग्ध-रस आदि पेय पदार्थ तूने ही तो उत्पन्न किये हैं। ये फल-फूल, ये धन-वैभव, ये सुख-सौभाग्य और इनके सेवन करने वाले इन प्राणियों को तूने ही बनाया है। फिर किस-किस तेरे कार्य को हम देखें, एक अपने शरीर को ही देखें तो यह ही इतना अद्‌भुत है कि यदि तूने हमें कृपा करके यह दे दिया है तो इस देह रूपी घर से फिर हमारा निकलने को मन नहीं करता। तेरे ज्ञान-विज्ञानों को और प्रज्ञानों को देखते हैं तो वे ऐसे हैं कि जब हम उनके स्वाध्याय में, उनके मनन, चिन्तन और निदिध्यासन आदि में लग जाते हैं तो हम अपना भोजन आदि भी भूल जाते हैं।

हे शतक्रतो! सैकड़ों प्रकार के ज्ञान-विज्ञान का तू अनुपम स्रोत है, नानाविध कर्म-सुकर्मों का तू दिव्य स्रोत है। हे ऐसे प्यारे परमेश्वर! तू (नः भद्रम् इषम् ऊर्जम् आभर) हमें सुखकारी और कल्याणकारी अन्न और रस प्रदान कर। हे इन्द्र। तू हमें ऐसे अन्न आदि खाद्य पदार्थ प्रदान कर, ऐसे दुग्ध-उदक आदि रस प्रदान कर कि जिस से हमारा इस लोक में सब प्रकार से सुख-सौभाग्य बढ़े और परलोक में भी हमारा सब प्रकार से कल्याण हो। तेरी कृपा से हम इस संसार में ऐसे पवित्र ढंग से धन, अन्न, रस आदि का उपार्जन करें, उसे ऐसे यज्ञमय ढंग से प्रयोग में लायें कि जिस में ब्रह्मयज्ञ-ब्रह्म का श्रवण, मनन, चिन्तन, निदिध्यासन आदि भी हो सके। देवयज्ञ, द्रव्ययज्ञ, अग्निहोत्र का भी प्रतिदिन उदार भाव से सम्पादन हो सके, बलिवैश्वदेव यज्ञ भी हो सके अर्थात् गौ, कुक्कर, दीन-हीन जनों के लिये भी धन, अन्न, वस्त्र आदि का भाग निकल सके, पितृयज्ञ भी हो सके अर्थात् माता-पिता आदि वृद्धजनों की भी जिस से श्रद्धा और सम्मान पूर्वक सेवा शुश्रूषा हो सके, अतिथियज्ञ अर्थात् देश-जाति के उत्थान में निःस्वार्थ भाव से संलग्न संन्यासी-विद्वानों का भी श्रद्धा सम्मान पूर्वक भली-भांति पालन-पोषण हो सके और स्वयं को यज्ञशेष सेवन करने का सौभाग्य मिल सके, जिस से कि जहाँ हमें इस संसार में स्नेह, सम्मान, यश और सुख मिले वहाँ इस जगत् से विदा होने पर भी हमारा सब प्रकार से कल्याण होवे।

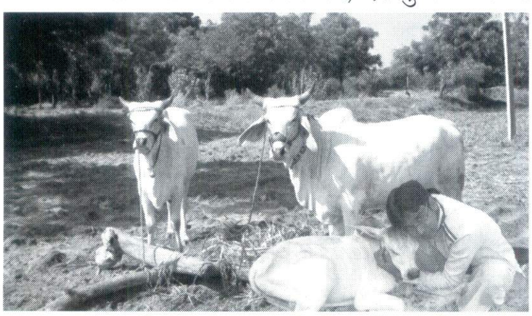

हे जगदीश्वर! हे सर्वेश्वर! हम इस संसार में धर्म-पूर्वक तेरी कृपा से धन-अन्नादि को प्राप्त कर उसका ऐसे सेवन करें कि हममें ऊँची से ऊँची इच्छा=कामना=अभिलाषा उत्पन्न हो और उस उच्चाभिलाषा को पूर्ण करने के लिए हमें पराक्रम भी प्रदान करना, ताकि हम सफल मनोरथ हो सकें।

हे परमैश्वर्य सम्पन्न परमात्मन्! क्योंकि तू हमें सब प्रकार से सुखी करना चाहता है, हमारा सब प्रकार से कल्याण करना चाहता है, तभी हम तुझ से यह प्रार्थना करते हैं, तुझ से यह विनय करते हैं कि तू हमें सुखद एवं कल्याण प्रद अन्न रस दे और उसके धर्म पूर्वक सेवन से उत्कट अभिलाषा के योग्य अन्तिम प्राप्तव्य के प्राप्त करने का पराक्रम भी प्रदान कर, ताकि हम तेरे उस परम सुख=परम शान्ति=परम आनन्द को पा जायें जिस के पाने पर फिर कुछ पाने को शेष नहीं रहता।

**लेखक- आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार**
**साभार- वैदिक प्रार्थना-सौरभ**

आत्म निवेदन

# ज्योतिषियों की निकली हवा

पाँच राज्यों के चुनाव परिणाम क्या आये एक बार फिर से ज्योतिषियों की हवा निकल गयी। हम फलित ज्योतिषियों की वास्तविकता पाठकों के समक्ष रखना अपना कर्तव्य समझ इनके द्वारा की गयी भविष्यवाणियाँ कितनी सच निकलीं इसका सच सत्यार्थ सौरभ में देते रहे हैं। **हर बार यही सिद्ध हुआ है कि फलित ज्योतिष विज्ञान तो क्या तुक्का भी नहीं है।** पर भारतीय जनता की आशावादिता टिकी रहती है कि कोई बात नहीं अबकी भले ही गलत निकली अगली बार भविष्यवाणी सही निकलेगी और इस वजह से ज्योतिषियों के धंधे पर कोई फर्क नहीं पड़ता।

अभी हाल में सम्पन्न चुनावों के नतीजों के बारे में विभिन्न ज्योतिषाचार्यों ने क्या भविष्यवाणी की थी तथा उनका क्या हश्र हुआ यह पाठक गण नीचे पढ़ें और फलित ज्योतिष की वास्तविकता पर चिंतन करें।

सबसे पहले उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड की चर्चा करें जहाँ भाजपा ने अभूतपूर्व विजय प्राप्त की।

Astrospeak.com ने लिखा है कि यूपी में अखिलेश बहुत अच्छा करेंगे पर सरकार बनाना शायद उनके हाथ में नहीं रहेगा। मायावती के सितारे इस चुनाव में उनकी किस्मत चमकाएँगे। कुल मिलाकर यूपी चुनाव में जीतने वाले का सही अंदाज लगाना कठिन है यद्यपि ज्योतिष के हिसाब से भाजपा जीत सकती है। यहाँ अत्यन्त ठन्डे तौर पर भाषा को घुमाने फिराने के

पश्चात् भाजपा की संभावना व्यक्त की है। परन्तु मायावती के किस्मत चमकने का दावा खोखला रहा।

७ मार्च १७ के अमर उजाला में देहरादून में चल रहे ज्योतिष सम्मलेन के हवाले से खबर छापी गयी है।

'देहरादून में चल रहे दो दिवसीय ज्योतिष महाकुंभ से एक के बाद एक बड़ी भवष्यिवाणी निकलकर सामने आ रही है। बेजान दारूवाला ने जहाँ उत्तराखंड में हरीश रावत की सरकार के वापस आने का दावा किया है वहीं एक अन्य ज्योतिषी सतीश शर्मा ने एक चौंकाने वाली भविष्यवाणी की है।

ज्योतिषशास्त्री सतीश शर्मा के अनुसार २०१७ में यूपी में होने वाले विधानसभा चुनाव में एक ऐसे गठजोड़ की सरकार बनेगी जिसकी कल्पना भी आपने नहीं की होगी। यह गठजोड़ बनेगा बसपा और भाजपा का। सतीश शर्मा बताते हैं कि वर्तमान में उत्तर प्रदेश में सत्तारुढ सपा की सरकार की २०१७ में सत्ता में वापसी नहीं होगी। **चुनाव में बसपा सबसे बड़ी पार्टी के रूप में सामने आएगी और भाजपा के समर्थन से उत्तर प्रदेश में नई सरकार का गठन होगा।**

स्पष्ट है कि यह महाकुम्भ चुनाव में लड़ रहे योद्धाओं के सितारों को ठीक से पढ़ने में नाकामयाब रहा। बेजान दारूवाला यद्यपि बहुत बड़ा नाम है, अगर यह भी कहा जाय तो अनुचित न होगा कि वे सेलीब्रिटी ज्योतिषी हैं पर यहाँ वे बेजान ही रहे क्योंकि हरीश रावत पुनः मुख्यमंत्री बनना तो दूर उन दोनों जगह से चुनाव हार गए जहाँ से वे लड़ रहे थे। सतीश शर्मा जी अब क्या स्पष्टीकरण दे रहे होंगे यह तो वे ही जानें।

एक और ज्योतिषाचार्य सचिन मल्होत्रा लिखते हैं- ज्योतिषशास्त्र के दृष्टिकोण से देखें तो यूपी के विधानसभा चुनाव राजनीतिक कारणों से रोमांचक किन्तु सांप्रदायिक हिंसा से प्रभावित भी हो सकते हैं। इस (उ. प्र. की) कुंडली में वर्तमान में शनि की साढ़े-साती का तीव्र प्रभाव तथा राहु में गुरु की संवेदनशील दशा चलने

से साम्प्रदायिक हिंसा का योग बन रहा है। (सपा) इस पार्टी की चुनावों में दूसरे स्थान पर रहने के अच्छे योग बन रहे हैं।
भाजपा की कुंडली में बन रहा गुरु-चांडाल योग उनके कुछ बड़े नेताओं को विवादों में फंसा सकता है, जिसके कारण उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनावों में इस दल को कुछ निराशा प्राप्त होगी। कांग्रेस पार्टी की मीन लग्न की कुंडली में यूपी विधान सभा चुनावों के समय गुरु में शुक्र की विंशोतरी दशा चलेगी। इसके प्रभाव से इस पार्टी के प्रदर्शन में कुछ सुधार होगा।
मायावती शुक्र उनकी कुंडली में पंचमेश मंगल और नवमेश गुरु से दृष्ट हो कर अष्टम भाव में है जो कि एक **चौंकाने वाली चुनावी सफलता की ओर संकेत दे रहे हैं। त्रिशंकु विधानसभा बनने की स्थिति में मायावती यूपी में मुख्यमंत्री बनने की सबसे प्रबल दावेदार हैं।**
फायनेंसिअल टाइम्स में प्रमोद गौतम लिखते हैं कि नरेंद्र मोदी के चमकते सितारों के कारण भाजपा अच्छी स्थिति में है। विजयश्री उनका वरण कर सकती है। वैदिक सूत्रम के अध्यक्ष ये प्रमोद गौतम ही सफल रहे सही भविष्यवाणी करने में जब उन्होंने मोदी को अन्य सब पर भारी बताया।
Amitbehorey.com में घोषणा की गयी है कि इन चुनावों में जहाँ भाजपा सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरेगी वहीं अखिलेश और मायावती में कड़ी टक्कर है जिसमें मायावती आगे रहेंगी। प्रतीत होता है कि इन्ही के हौंसला अफजाई के कारण मायावती ने ईवीएम को निशाना बनाया है।
एक ज्योतिषी निगम को उद्धृत कर दैनिक पायोनियर में लिखा था कि उत्तर प्रदेश में किसी भी दल को बहुमत नहीं मिलेगा यद्यपि मायावती सरकार बनाने के काफी करीब पहुँच जायेंगी और यह भी कि कांग्रेस अखिलेश को धोखा देकर मायावती को सरकार बनाने में मदद कर सकती है।
बीजेपी मुख्यालय के बाहर बैठने वाले पंडित राम कुमार दिल से चाहते हैं कि उत्तर प्रदेश में बीजेपी की सरकार बने पर वे मायूस थे क्योंकि सितारे उनकी दिली चाहत के समर्थन में उन्हें नहीं दिखायी दे रहे थे।
Astrologicalmusings.com में संजय मल्होत्रा के अनुसार पंजाब व गोवा में आप पार्टी सरकार बनाने जा रही है। दोनों जगह विशेष रूप से गोवा में पार्टी की क्या हालत हुयी है यह अब सभी के समक्ष है।
अगर पंजाब के चुनावों की बात पृथक् से करें तो न केवल पारंपरिक ज्योतिषी वरन् टेरो कार्ड रीडर, अंक ज्योतिषी सभी ने अपने जौहर का प्रदर्शन किया। संक्षिप्त विवरण से देखें कि किस प्रकार सब के तीर तुक्का मात्र निकले।
गुडगाँव की टेरो कार्ड रीडर सुनिधि मेहरा ने पंजाब में किसी दल को भी बहुमत न मिलने की बात की भविष्यवाणी करते हुए कांग्रेस की बढ़ोतरी की बात कही और विशेष यह कि केजरीवाल के समर्थन से कांग्रेस सरकार बना पायेगी।
चंडीगढ़ के ज्योतिषी मदन गुप्ता सप्तू ने भी ऐसी ही त्रिंशकु विधानसभा की भविष्यवाणी की। जबकि चंडीगढ़ के ही एन.डी. खेत्रपाल जो कि अंकों के आधार पर भविष्यवाणियाँ करते हैं, के अनुसार **अरविन्द केजरीवाल का अंकगणितीय योग शानदार बन रहा है और कोई कारण नहीं है कि वे पंजाब में सरकार न बना सकें।** यहाँ उल्लिखित कर दें कि इनसे अच्छा तो तोता गंगाराम रहा जिसके भविष्य-कथन के अनुसार कप्तान अमरिंदर सिंह पंजाब के मुख्यमंत्री बन गए।
एक ज्योतिषी हैं जिनकी भविष्यवाणियाँ सटीक कही जाती हैं नाम है सुशील चतुर्वेदी। उनका कहना है कि **जनवरी २०१७ में आप पार्टी समाप्त हो जायेगी** और अरविन्द केजरीवाल का नाम गुमनामी में चला जाएगा।
यह लेख लिखते समय दिल्ली एम.सी.डी. के चुनाव सर पर हैं और राजनीतिक विशलेषकों के अनुसार तथा अभी विधानसभा उपचुनावों में आप की करारी हार देख, आप की कोई संभावना नहीं दिख रही है, परन्तु चतुर्वेदी के अनुसार आप तथा अरविन्द केजरीवाल समाप्त हो जायेगे देखना बाकी है।
तो पाठकगण यह है यथार्थ स्थिति फलित ज्योतिष को सटीक विज्ञान बताने वालों की। क्या उचित नहीं है कि इनके चक्कर लगाने की बजाय हम अपने पुरुषार्थ पर विश्वास करें और उत्तम कर्म करके श्रेष्ठ प्रारब्ध का निर्माण करने में जुट जायँ।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ८००५८०८४८५

❑❑❑

# श्राद्ध और तर्पण का वैदिक स्वरूप

एस. एस. कोठारी
माननीय लोकायुक्त (राजस्थान सरकार)

आदरणीया श्रीमती सरोज आर्य (वर्मा) की सद्यःप्रकाशित 'श्राद्ध एवं तर्पण का वैदिक स्वरूप' पुस्तक के लोकार्पण और समीक्षा संगोष्ठी में उपस्थित हो मुझे अतीव हर्ष की अनुभूति हो रही है। मैं सर्वप्रथम श्रीमती सरोज जी को उनकी इस १६वीं पुस्तक के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई देता हूँ।

श्रीमती सरोज जी ने अपनी इस पुस्तक में आडम्बर विरोधी दृष्टिकोण और समाज सुधार के लिए वैदिक परम्पराओं को जीवन के लिए श्रेयस्कर बताया है। मुझे पुस्तक को पढ़कर यह अनुभूति हुई कि वाकई **यह पुस्तक पाखण्ड विहीन आध्यात्मिक जीवनशैली को अपनाने की प्रेरणा देने वाली है।** सरोज जी ने इस सार्थक और उपयोगी पुस्तक के माध्यम से यह संदेश देने का सराहनीय प्रयास किया है कि वेदोक्त कर्मों के निष्ठापूर्वक पालन करने से मनुष्य, मनुष्य बनता है और वेद में भी ऐसा आदेश वर्णित है कि 'मनुर्भव' अर्थात् हे मनुष्य, तू मनुष्य बन! पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर इसे बड़े सुन्दर ढंग से विवेचित किया है कि मानव, मानव कैसे बने, मानव बनकर कैसे परस्पर व्यवहार करे। इन सबकी उदात्त प्रेरणाएँ वेद में वर्णित हैं और लेखिका ने स्पष्ट रूप से यह लिखा है कि 'मनुष्य बनने का एक ही मार्ग है- वह है वेदोक्त मार्ग की पालना। पुस्तक अध्ययन से मुझे तो यह भी आभास हुआ है कि सरोज जी के विचारों में सर्वत्र राष्ट्र उत्थान और विश्व कल्याण की भावना निहित है।

पुस्तकानुसार दैनिक जीवन में अज्ञानतावश होने वाली छोटी छोटी हिंसा के प्रायश्चित के लिए महर्षि मनु ने पञ्चमहायज्ञों का विधान किया है। ये पञ्चमहायज्ञ व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व की उन्नति के आधार हैं। देखिये कैसे- ब्रह्मयज्ञ आत्म उन्नति का, देवयज्ञ पारिवारिक, सामुदायिक उन्नति का, पितृयज्ञ सामाजिक उन्नति का, अतिथि यज्ञ राष्ट्रीय उन्नति का एवं बलिवैश्वदेवयज्ञ सम्पूर्ण उन्नति का नियामक है। पुस्तक के माध्यम से यह बताने का भी सार्थक प्रयास हुआ है कि पञ्चमहायज्ञ समस्त सुखों के मूल और दुःखों को दूर करने के साधन हैं। मानव जीवन की समस्त समस्याओं के निराकरण का एकमात्र उपाय पञ्चमहायज्ञ ही है इसीलिए मानव समाज को शांतिमय, स्वस्थ, समृद्ध एवं समुन्नत बनाने के लिए प्राचीन ऋषि मुनियों ने पञ्चमहायज्ञों का विधान किया है।

श्रीमती सरोज जी ने पुस्तक के छठे पृष्ठ पर पितृयज्ञ में यज्ञ शब्द का बड़े सरल अर्थों में वर्णन करते हुए पृष्ठ ८ पर पितृयज्ञ के बारे में बड़ी अच्छी बातें लिखते हुए इसका उद्देश्य वर्णित किया है। यह प्रेरणास्पद और विशेष रूप से नई पीढ़ी के अध्ययन योग्य है। वैदिक संस्कृति के अनुसार

पञ्चमहायज्ञों का करना प्रत्येक गृहस्थ का अनिवार्य कर्म है जिसमें पितृयज्ञ भी एक है। **पितृयज्ञ जीवित माता-पिता आदि वृद्धजनों के प्रति हमारे कर्तव्यों का ज्ञापक है।** मानव का जीवन परिवार और समाज के व्यक्तियों के सहयोग व उपकार से चलता है । माता पिता बालक के जन्मदाता हैं, आचार्य एवं अध्यापक ज्ञानदाता और विद्वद्गण मार्गदर्शक और प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं। **इन्हीं की श्रद्धापूर्वक सेवा**

**करने का विधान पितृयज्ञ में किया गया है।**

श्रीमती सरोज जी ने पृष्ठ १२ पर उल्लेख किया है कि आज संयुक्त के स्थान पर एकल परिवार की परम्परा प्रचलित है। माता-पिता एवं उनकी सन्तान, यही उनका परिवार। वस्तुतः परिवार में माता-पिता आदि वृद्धजनों का भी समावेश है परन्तु आधुनिक सुख सुविधा प्राप्ति की इच्छा, स्वतंत्र, स्वच्छन्द व उन्मुक्त जीवन जीने एवं माता-पिता आदि वृद्धजनों को अपने विकास में बाधक समझने की प्रवृत्ति के कारण परिवार के वृद्धजन तिरस्कृत एवं उपेक्षित हो रहे हैं। सुख सुविधा सम्पन्न होते हुए भी वे एकाकी एवं अवसादिक जीवन जीने को विवश हैं अथवा एकांकी में जीवन व्यतीत कर रहे हैं। पुस्तक के पृष्ठ १३ पर जीवित माता पिता की वृद्धावस्था में सेवा सुश्रूषा नहीं करने पर संभावित हानि को इंगित कर लेखिका ने यह समझाने का बहुत अच्छा और सार्थक प्रयास किया है कि भविष्य निर्माण के लिए अपने वृद्ध माता-पिता का आदर करें, उनकी सेवा करें, उनकी सुख सुविधाओं, औषधियों एवं आवश्यकताओं का विशेष ध्यान रखें ताकि वे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट होकर मन से आशीर्वाद देते रहें जो आपकी प्रगति में साधक होगा। पुस्तक में पृष्ठ १६ पर पुराणों में वर्णित श्राद्ध एवं तर्पण को अवैदिक एवं अव्यावहारिक बताते हुए विदुषी लेखिका ने चिन्ता व्यक्त करते हुए लिखा है कि 'यह हमारे समाज एवं देश का दुर्भाग्य ही है कि अधिकांश लोग ईश्वर के बताये वेद प्रतिपादित मार्ग पर न चलकर समाज में मिथ्या परम्पराओं का अनुसरण करते हैं।

**"पञ्चमहायज्ञ समस्त सुखों के मूल और दुःखों को दूर करने के साधन हैं।"**

श्रीमती सरोज जी ने पुस्तक के २२ वें पृष्ठ पर मृत्यु उपरांत दाहकर्म एवं अस्थि संचय के अतिरिक्त अन्य कर्मों का जो विरोध प्रकट किया है वह एकदम सटीक और औचित्यपूर्ण है। पुस्तक में उल्लेख है कि आज के इस वैज्ञानिक युग में मृतक स्वजन की मुक्ति या सद्गति के नाम पर जिन अनेक परम्पराओं को प्रचलित कर रखा है, वे सही नहीं हैं। महर्षि दयानन्द ने पुराणों में वर्णित इन क्रियाओं को मिथ्या तथा अकर्तव्य बताया है। उनके अनुसार शरीर के अन्त होने पर किसी भी प्रकार के अन्य कर्मों के सम्पादन की आवश्यकता नहीं है क्योंकि उस कर्म का मृतक के ऊपर कोई प्रभाव नहीं होता है। पुस्तक में पृष्ठ ३१ से ३८ में मृत्यु का अर्थ, श्राद्ध के निमित्त ब्राह्मणों, कौओं और गायों को खाना देना, मृत पूर्वजों का भोजन अधिग्रहण करने आना, गोदान से वैतरणी नदी को तरना आदि विषयों पर विस्तार से सार्थक एवं सटीक टिप्पणी की है। पाखण्डों का जमकर विरोध करते हुए उन्होंने वेदोक्त कर्मों को सही रूप से समक्ष रखा है। विदुषी लेखिका ने पृष्ठ ४२ पर 'वेदमंत्रों द्वारा मृतक श्राद्ध को वेदसम्मत सिद्ध करने का असफल प्रयास' शीर्षक में महर्षि दयानन्द द्वारा वेदादि शास्त्रों के आधार पर श्राद्ध का सत्य स्वरूप जनसामान्य के समक्ष प्रस्तुत कर बताया कि **वेद में एक भी ऐसा मंत्र नहीं जिससे यह सिद्ध होता हो कि ब्राह्मणों को भोजन कराने से या दान से मृत पूर्वज तृप्त होता है।**

हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों ने वेद विज्ञान को अंगीकार करते हुए दैनिक जीवन के लिए कर्तव्य-अकर्तव्य का उपदेश देकर लोक जीवन को सही अर्थों में उजागर किया है। वेदोक्त कर्मों की पालना करने वाला व्यक्ति अपने माता-पिता, आचार्य आदि को तीर्थ के समान मान सम्मान प्रदान करता है और उनके मार्गदर्शन से अपने जीवन पथ को प्रशस्त करता है। **सच्चा मनुष्य वही है जो जीवित पितरों को सम्मान दे और श्रद्धापूर्वक उनकी सेवा सुश्रूषा कर उनका आशीर्वाद प्राप्त करे। श्राद्ध का यही वास्तविक अभिप्राय है।** तथाकथित पंडितों ने इसे मृतक पूर्वजों के तर्पण से जोड़कर इसका स्वरूप ही बदल दिया जो विवेक सम्मत नहीं है। हम जीवित बुजुर्गों के प्रति अश्रद्धा प्रकट करें और मृतक पूर्वजों का श्राद्ध करें, यह कहाँ तक औचित्यपूर्ण है? पुस्तक में इन्हीं सिद्धान्तों, धारणाओं और विचारों को बखूबी प्रकट किया है। पुस्तक वेदोक्त कर्मों को आगे बढ़ाने और वेद प्रतिपादित मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। इस मार्ग पर चलकर ही हम परिवार, समाज, देश और विश्व में सुव्यवस्थित एवं शांतिमय वातावरण स्थापित करने में सफल हो सकते हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि न केवल चिन्तनशील बुद्धिजीवी अपितु सामान्य पाठक भी इस पुस्तक में विवेचित विषय से विवेकसम्मत मार्गदर्शन प्राप्त कर सत्य एवं शाश्वत वैदिक मान्यताओं के अनुरूप अपनी जीवन शैली का निर्माण करेंगे। एक बार पुनः श्रीमती सरोज आर्य (वर्मा) को सद्यःप्रकाशित पुस्तक के लिए बहुत बधाई और मंगलकामनाएँ।

**लोकायुक्त, राजस्थान**
**शासन सचिवालय परिसर, जयपुर- ३०२००५**
**फोन नं. ०१४१-२२२७२८४**

❑❑❑

**सरोज जी कि यह पुस्तक सत्यार्थ सौरभ के सभी पाठकों को निःशुल्क भेजी जावेगी।**

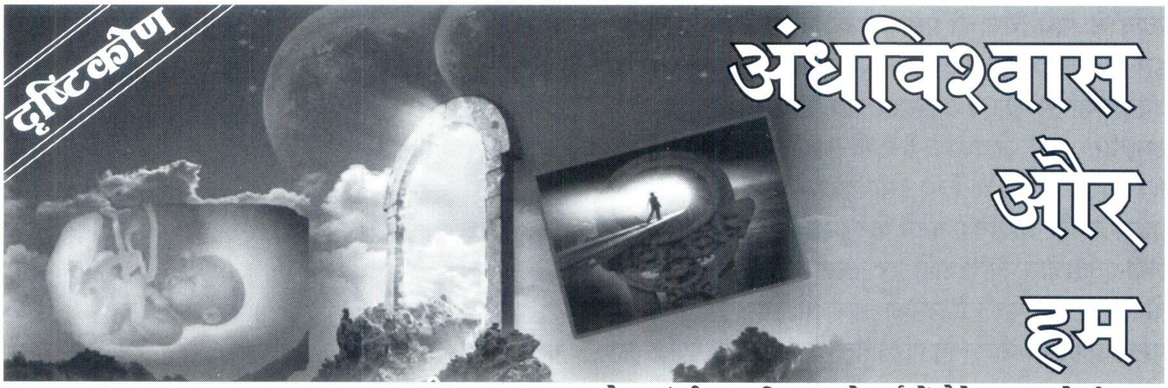


२१ वीं सदी में जो अन्धविश्वास समाप्त होना चाहिए था वह १७ वीं शताब्दी से भी ज्यादा परिपक्वता के साथ अपनी जड़ें जमा रहा है। आज के वैज्ञानिक युग में भी हम पुरातन काल के अन्धविश्वासी विचार रखते हैं। सच तो यह है कि हम उस में से कभी निकल ही नहीं पाए न ही निकलने का प्रयास ही किया गया। प्राचीन मान्यताओं धारणाओं को ज्यों का त्यों निर्वहन किए जा रहे हैं, बिना उन के उद्‌गम कारण व तथ्यों पर विचार किए। शिक्षा व ज्ञान के अभाव ने अन्धविश्वास को जन्म दिया जो आज शिक्षा, ज्ञान व विज्ञान के होते हुए भी जस का तस है। अन्धविश्वास की कोई लिखित संहिता नहीं है न ही इसका पालन करना आवश्यक होता है यह प्रचलित पारम्परिक विचार-मत हैं जो हमें अपने समाज, परिवार और पूर्वजों से एक कर्ज के रुप में प्राप्त होते हैं जिसकी (EMI) जीवन भर चुकाते रहते हैं। व्यक्ति परिस्थितियों पर नियन्त्रण अथवा निश्चित परिणाम की प्राप्ति के लिए अन्धविश्वास का सहारा लेते हैं। असल में हम दोहरे व्यक्तित्व का जीवन जीते हैं एक ओर ईश्वर की प्रभुसत्ता को स्वीकार कर स्वयं को उसी के मार्ग पर चलने की इजाजत देते हैं तो दूसरी ओर उसी के मार्ग से विमुख हो कर अन्धविश्वास का सहारा लेते हैं। उदाहरण के लिए गीता

में बताए कर्म के मार्ग की वकालत करेंगे तो दूसरी ओर उस कर्म के परिणाम को निश्चित करने के (अपनी चाहत के अनुरूप) लिए कर्म का त्याग कर टोटकों का सहारा लेंगे अथवा अन्तरिक्ष की ओर टकटकी लगाए रहेंगे। सरल अर्थ मे कहें तो एक अच्छा डॉक्टर, वकील, वैज्ञानिक बनने के लिए जिस परिश्रम की आवश्यकता होती है वह न कर के अन्तरिक्ष से आने वाले उसके परिणाम को किसी टोटके से सुनिश्चित करने में लगे रहते हैं। क्या कर्म का परिणाम अन्तरिक्ष से आता है वह भी ऐसा कर्म जो किया ही नहीं गया हो। यदि आता है, तो कैसे और कौन से माध्यम से हम तक पहुँचता है। पूर्वजों के अन्धविश्वास रुपी कर्ज के चलते आज हमारी युवा पीढी परिश्रम कर भविष्य को सुनिश्चित करने की बजाय दूर अन्तरिक्ष में स्थित निर्जीव ग्रह व तारों से भविष्य निर्माण की आस लिए ज्योतिषियों के दरबार में पालथी लगाए बैठी है, उनकी यही कर्महीनता भाग्यहीनता में परिवर्तित होकर उनके नहीं वरन् समाज के समक्ष खड़ी है। इसलिए आज बुद्धिजीवी वर्ग का इस पर चिन्तित होना लाजमी है। **जो युवा समाज को एक नई राह दिखा सकते हैं वे स्वयं ही अन्धविश्वास के गर्त में बैठे हुए अपने ही पतन की कहानी लिख रहे हैं।** शिक्षा, नौकरी, व्यवसाय, परिवार, सन्तान, धन-सम्पत्ति, स्वास्थ्य आदि विषयों को प्रभावित करने वाले तत्व सुदूर अन्तरिक्ष में स्थित न होकर यहीं पृथ्वी पर सामाजिक परिवेश, आर्थिक, पारिवारिक, व्यक्तिगत, राजनैतिक, भौगोलिक विषमता, जलवायु आदि अनेक रुप में विद्यमान हैं जिनमें से कुछ पर व्यक्ति का नियन्त्रण है कुछ पर नहीं है। जिसके कारण व्यक्ति अपने जीवन में घटने वाली बहुत सी घटनाओं को नियन्त्रित कर पाते हैं जिन्हें नहीं कर पाते हैं उसके लिए फिर वही आकाश की ओर...गैस के गेंदों की तरफ उनसे आने वाले किसी अदृश्य प्रभाव को पकड़ने के लिए...

आत्मविश्वास मनुष्य की अदृश्य और कर्म सदृश्य शक्ति है। आत्मविश्वास अदृश्य इसलिए क्योंकि व्यक्ति कभी इसे सदृश्य रुप में साकार करते ही नहीं हैं। जब कर्म ही आत्मविश्वास के साथ नहीं किया जाएगा तो परिणाम

अनिश्चित ही रहेगा। जब व्यक्ति यही नहीं जानते कि जो कर्म किया जा रहा है, वह सही दिशा में हो रहा है अथवा नहीं तो ऐसे में किसी निश्चित परिणाम की अपेक्षा कैसे की जा सकती है? कर्महीन व्यक्ति परिश्रम की महत्ता को नकारते हुए यह तर्क देते नजर आते हैं कि यदि परिश्रम ही सब कुछ होता तो एक मजदूर जो सबसे अधिक परिश्रम करता है वह सबसे अमीर होता। हालांकि एक मजदूर के श्रम की तुलना किसी अन्य श्रम से नहीं की जा सकती है क्योंकि वह परिश्रम को अपनी शारिरिक क्षमता से परे भी ले जाते हैं और बहुत से ऐसे उदाहरण भी हैं जहाँ आज के समृद्ध व्यक्ति एक समय में ठेला आदि भी लगाते थे, यदि उन्होंने बड़े स्वप्न देखे तो उन्हें पूरा करने की दिशा में परिश्रम भी किया। परन्तु कर्महीन व्यक्तियों का परिश्रम की महत्ता को नकारने का यह तर्क पूर्णतः निरर्थक है क्योंकि अपने पुरुषार्थ रहित जीवन में कुछ न करने की चाहत लेकर भाग्यवादी स्वप्न के साथ चित्त की प्रसन्नता की सिद्धि सम्भव नहीं है। इस तर्क का प्रत्युत्तर मात्र इतना है कि बोये पेड़ बबूल का तो आम कहाँ से खाए। अभिप्राय यह कि लक्ष्य क्या है उसी अनुसार कर्म आवश्यक है तभी लक्ष्य की प्राप्ति होती है। एक डॉक्टर बनने के लिए इसी दिशा में शिक्षा ग्रहण करनी पड़ती है और वैज्ञानिक बनने के लिए विज्ञान की।

जितना विश्वास व्यक्ति ग्रहों पर करते हुए उन्हें प्रसन्न करने के लिए टोटके करते हैं उसका आधा भी स्वयं पर करते हुए पुरुषार्थ करें तो जीवन ही परिवर्तित हो जाए। कुछ व्यक्ति यह भी कह सकते हैं कि यदि परिश्रम करने के बाद भी सफलता न मिले तो! इस प्रश्न का उत्तर यह है कि जो कार्य आप मनुष्य होकर भी नहीं कर पाए वह करोड़ों कि.मी. दूर से ग्रह अथवा टोटके किस प्रकार कर सकते हैं और जब पता ही है कि ग्रह अथवा टोटकों से कार्य होना निश्चित है तो परिश्रम करने की क्या आवश्यकता थी- स्वयं विचार करें। स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो व्यक्ति की सफलता-असफलता का कारण व्यक्ति स्वयं ही है परन्तु अन्धविश्वास के चलते उसका श्रेय ग्रहों टोटकों को दिया जाता है। परिणामस्वरूप ज्योतिषियों का धन्धा चमकता है। व्यक्ति अपनी समस्याओं के निवारण के लिए ज्योतिष, तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र, टोटके आदि का सहारा लेते हैं इस बात पर विचार किये बगैर कि समस्या का कारण जाने बिना उसका निवारण नहीं किया जा सकता है। यदि किसी मैकेनिक को कार में आई खराबी दूर करने के लिए कहा जाए और वह उसे ठीक करने की बजाय ग्रहों का जाप बता दे या कोई टोटका करने को कहे तो क्या आप उसकी बात पर यकीन करेंगे? करना तो दूर दोबारा उसके पास भी नहीं जायेंगे क्योंकि आप अच्छी तरह से जानते हैं कि खराबी कार के किसी पुर्जे में है जो मैकेनिक-इंजीनियर ही समझकर ठीक कर सकता है लेकिन स्वयं की असफलता के पीछे के कारण पर विचार न करते हुए सीधे ही अन्तरिक्ष मे पहुँच जाते हैं। अब कुछ समय के लिए फ्लैशबैक में चलते हैं- आप यह तो समझते ही हैं कि कार कुंडली में वाहन योग-ग्रह दशा सही हुए बिना नहीं आ सकती है, जब आ नहीं सकती है तो खराब भी ग्रह दशा के कारण ही होनी चाहिए। खराब होने की स्थिति में कार को मैकेनिक के पास क्यों ले जाते हैं! ज्योतिषी के पास क्यों नहीं जाते हैं उसी ने तो ग्रह दशा सही करके कार दिलवाई थी तो ठीक भी कर ही सकते हैं- टोटके से! तब आप अन्तरिक्ष में नहीं पहुँचते हैं, स्वयं की समस्याओं-शिक्षा, विवाह, नौकरी, धन व्यापार आदि के लिए ग्रहों को कारण कैसे मान लेते है? यदि किसी व्यक्ति को नौकरी नहीं मिल रही, विवाह नहीं हो रहा, व्यापार

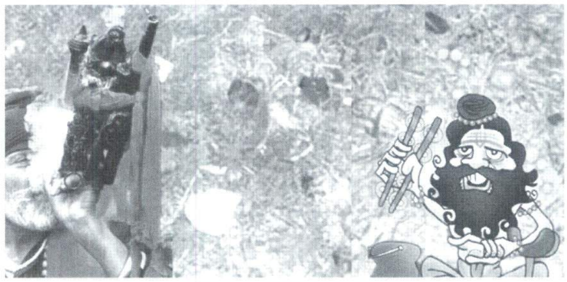

नहीं चल रहा, स्वास्थ्य सही नहीं रहता, धन सम्बन्धी समस्या है तो इसके लिए ग्रह कैसे जिम्मेवार हो गए? यह विचार ही हास्यास्पद है कि- 'जन्म समय में आकाश में ग्रहों की स्थिति सही नहीं थी इसलिए मेरे साथ ऐसा हो रहा है'- वह भी ऐसे ग्रह जो रेत पत्थर गैस बर्फ आदि से निर्मित हैं वह किसी की नौकरी नहीं लगने देते, किसी का विवाह नहीं कराते, किसी को गरीब बना देते हैं, किसी का व्यापार नहीं चलने देते, किसी के जीवन का ही सत्यानाश कर डालते हैं। इस से भी अधिक हास्यास्पद बात तो यह है कि ग्रहों को ऐसा करने से रोकने-ठीक करने के लिए अनेक प्रकार के दकियानूसी टोटके किये जाते हैं जो ठीक वैसा ही है कि जंगल में अपनी ओर आते हुए शेर को देखकर किसी खरगोश से मदद करने को कहा जाए।

व्यक्ति ज्योतिष पर विश्वास करके ग्रह जाल में कैसे फस जाते हैं- अपने अन्धविश्वासी विचार अज्ञानता और बुद्धि प्रयोग न करने के कारण। ज्योतिष का प्रचार भविष्य बताने वाली विद्या के रुप में किया जाता है - भविष्य ज्ञात किया जा

सकता है और उसे टोटके करके बदला जा सकता है यह हुआ अन्धविश्वास। ज्योतिष में ऐसा कोई सिद्धान्त ही नहीं है जिससे भविष्य को पहले से ही जाना जा सकता हो यदि होता तो सभी ज्योतिषी अपना और अपने परिवार, रिश्तेदार, मित्रों आदि का भविष्य ज्ञात कर टोटके से बदलकर उन्हें कहीं से कहीं पहुँचा देते। यह हुई अज्ञानता। अपने जीवन की हर घटना के लिए ग्रहों को कारण समझ कर टोटके कर उन्हें सही करने का प्रयास करना व्यक्ति द्वारा बुद्धि का प्रयोग न करना दर्शाता है। होता यह है कि किसी सफल व्यक्ति की सफलता के पीछे उसकी कुंडली में अच्छी ग्रहीय स्थिति का होना दर्शाकर आपकी असफलता के लिए कुंडली में ग्रह स्थिति का अच्छा न होना, कारण बनाकर आपको लूटने के लिए मानसिक रुप से तैयार किया जाता है

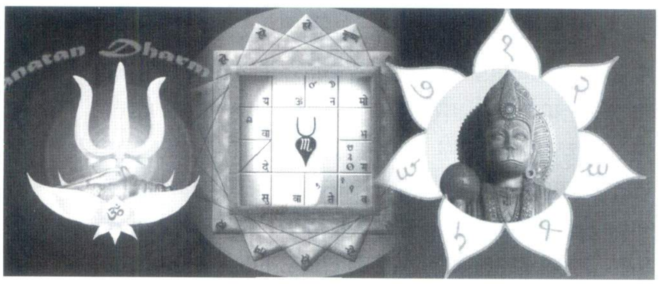

और इसमें अन्धविश्वासी विचारों के चलते ज्यादा समय भी नहीं लगता है। टोटके, यन्त्र-मन्त्र-रत्न आदि पर विश्वास दिलाने के लिए अनेक तरह के हथकंडे अपनाए जाते हैं। चूँकि व्यक्ति अपनी जन्म तिथि नहीं बदल सकते हैं और कुंडली मे ग्रहों की स्थिति जो जन्म तिथि समय पर ही आधारित वह भी नहीं बदली जा सकती है परन्तु ज्योतिषियों को तो प्रत्येक व्यक्ति को लूटना ही होता है वरना धन्धा कैसे चलेगा। इसलिए विभिन्न प्रकार के टोटकों द्वारा यह विश्वास दिला दिया जाता है कि उनसे ग्रहों के फल को बदला जा सकता है एक बार यह विश्वास हो जाने पर कि जीवन की हर समस्या का कारण ग्रह ही है कौन सा व्यक्ति समस्या से निजात पाने के लिए उपाय नहीं पूछेगा/करेगा। जाहिर है ज्योतिषी जो भी उपाय बताएँगे वह किया ही जायेगा। जब व्यक्ति पहले से ही मानसिक रुप से तैयार होकर लुटने आए हों तो उन्हें मूर्ख बनाना मुश्किल कार्य नहीं होता है।

ज्योतिष जैसे अन्धविश्वास से बाहर निकलने में यह ब्लॉग आपकी पूर्ण सहायता करे यह इसके लेखन का उद्देश्य है। ज्योतिष बोगस है यह बार-बार कहा जा रहा है वह भी अनेक तर्क-तथ्य-प्रमाण के साथ। जिसे समझना आपको है हम तो केवल बता सकते हैं कि ज्योतिष में ऐसा कोई सिद्धांत नहीं है जो भूत भविष्य की सटीक जानकारी देता हो इसलिए ज्योतिषियों की सामान्य बातों को भविष्यवाणी समझ कर आजीवन रटते रहने की बजाय अपनी बुद्धि को ज्योतिष कैसे बोगस है यह समझने में लगाकर अपना और अपने परिवार, मित्रों आदि का भविष्य बरबाद होने से बचाएँ। और कुछ न सही तो इस वर्ष संकल्प करें कि हम अन्धविश्वास नहीं फैलाएगे। स्वयं के साथ समाज को अन्धविश्वास से बाहर निकालने में सहयोग कर स्वस्थ समाज का निर्माण करें।

❑❑❑

– आशीष शांडिल्य


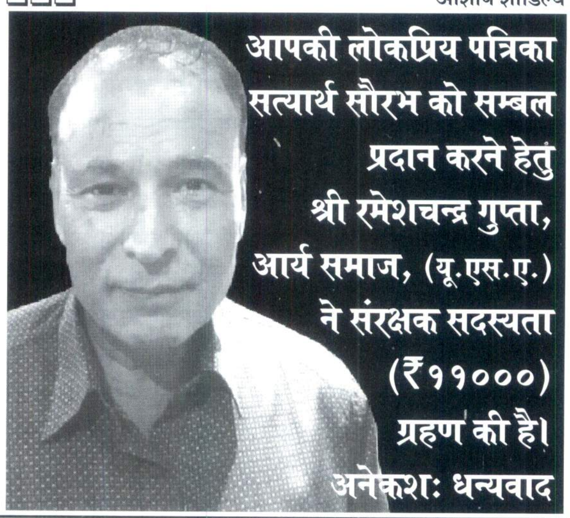

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

**सबसे बड़ा धर्म है सेवा,**
**सेवा है सुख का आधार।**
**सफल वही होता है जग में,**
**जो करता है सबसे प्यार।।**

**सत्यार्थ सौरभ**
**घर-घर पहुँचावें**

**सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना**

**आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्यता सूची में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।**

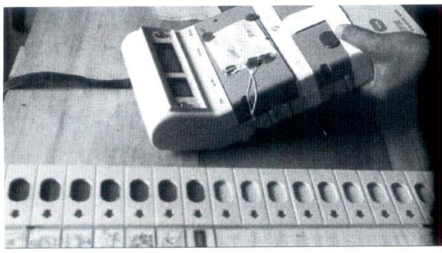

# खिसियानी बिल्ली.......

विधान सभाओं के चुनाव सम्पन्न हुए। उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड में भाजपा ने अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की जबकि मणिपुर व गोवा में पिछड़ने के साथ पंजाब में करारी हार का सामना किया। उत्तर प्रदेश में सपा को भी तगड़ा झटका लगा जबकि बीएसपी का तो सारा तानाबाना ही धूल-धूसरित हो गया। चुनाव-परिणामों की घोषणा के बाद मायावती ने हार का सारा ठीकरा ईवीएम मशीनों पर फोड़ते हुए उनके खिलाफ साजिश तथा बीजेपी द्वारा ईवीएम मशीनों में सुनियोजित हेराफेरी द्वारा चुनाव को अपने पक्ष में करने की बात कह डाली। उनके तर्क इतने हास्यास्पद हैं कि उनके जितनी वरिष्ठ नेत्री से कोई भी राजनीतिक विश्लेषक अपेक्षा नहीं रख सकता। वस्तुतः इस बार मायावती ने अन्य सभी दलों को मुस्लिम राजनीति में पीछे छोड़ते हुए सर्वाधिक मुस्लिम उम्मीदवारों को खड़ा कर अपने दल की विजय की उम्मीद इस एक चाल पर लगा रखी थी। उनकी यह रणनीति बुरी तरह पिट गयी। इसी के साथ उनकी विश्लेषण क्षमता भी चुक गयी। उनका तर्क है कि मुस्लिम बहुल इलाकों में भी बीजेपी जीती है जैसे ४० प्रतिशत मुस्लिम आबादी बाले देवबंद में, यह इस बात का पर्याप्त सबूत है कि बीजेपी ने यह व्यवस्था ईवीएम में करवा दी थी कि बटन कोई भी दबाया जाय वोट बीजेपी को मिले। अन्यथा क्योंकि मुस्लिमों के वोट बीजेपी को मिल ही नहीं सकते (यह उनकी अटल धारणा है) अतः बीजेपी उम्मीदवार को हारना ही चाहिए। यही बचकाना तर्क एक चैनल पर बसपा का प्रतिनिधित्व कर रहे किन्हीं खान साहब ने रखा तो एंकर महोदय ने स्पष्ट पूछा कि मुस्लिमों के वोट भाजपा को क्यों नहीं मिल सकते तो वे बगले झाँकने लगे।

कुछ समय पश्चात् सपा भी ईवीएम विरोधी हो गयी और तो और अरविन्द केजरीवाल एक कदम आगे बढ़ गए। पंजाब में अपनी आकांक्षाओं की हत्या की ग्लानि से बचने के लिए उन्होंने भी ईवीएम विरोध में सहारा तलाश किया और अपनी आदत के मुताबिक एक माँग भी रख दी कि दिल्ली के आगामी नगर निगम चुनाव ईवीएम के बजाय पुरानी बेलट पेपर पद्धति से कराये जायँ। अन्ना हजारे ने उनकी इस माँग की जमकर आलोचना की है।

अरविन्द से पूछा जा सकता है कि दिल्ली में जब ईवीएम मशीन के द्वारा कराये चुनावों में उन्होंने ६७ सीटें प्राप्त कर एक इतिहास का सृजन किया था तब क्यों सत्ताधारी पार्टी ईवीएम को टेम्पर नहीं कर पायी थी। क्यों उन्होंने ईवीएम का विरोध नहीं किया था? अगर बीजेपी केंद्र में सत्तारूढ़ होने के कारण ईवीएम में ऐसा जुगाड़ कर पायी कि उत्तर प्रदेश तथा उत्तराखंड में मशीन पर मतदाता बटन किसी उम्मीदवार के पक्ष में दबाये पर जाता उसी के पक्ष में था जहाँ बीजेपी चाहती थी तो दो प्रश्न उठते हैं- प्रथम तो यही जुगाड़ पंजाब में क्यों नहीं कर पायी। जहाँ उसे शर्मनाक हार का सामना करना पड़ा? जबकि वहाँ तो राज्य में भी वह सत्तारूढ़ पार्टी थी, और गोवा में उसने इस जुगाड़ का इस्तेमाल क्यों नहीं किया कम से कम अपने मुख्यमंत्री की हार की शर्मिंदगी तो नही उठानी पड़ती। द्वितीय, चुनाव किसी भी राज्य में राज्य सरकार के द्वारा कराये जाते हैं। सारे अधिकारी कर्मचारी राज्य सरकार के ही होते हैं। यूपी, उत्तराखंड में क्रमशः सपा तथा कांग्रेस की सरकारें थीं तब ऐसा कैसे हो सकता था? ईवीएम की तकनीकी न्यूनताएँ देखने से पूर्व राजनेताओं की मनःस्थिति को समझने के लिए हम वोटिंग प्रक्रिया को समझें तो इनका मानस स्वयमेव प्रत्यक्ष हो जाएगा। कौनसी ईवीएम कहाँ जायेगी क्या यह पूर्व से सुनिश्चित किया जाता है। नहीं random तरीके से मशीनें विभिन्न पोलिंग बूथ पर जाती हैं। अतः चुन-चुनकर ईवीएम को 'अपने लिए' तैयार नहीं किया जा सकता। आप कह सकते हैं कि सभी मशीनों के साथ ऐसी तकनीक लगा दी जाती है जिससे शासक मनचाहा परिणाम प्राप्त कर सकता है तो तनिक विचार करें कि एक ईवीएम में अधिक से अधिक ३८४० मत संग्रहीत किये जा सकते हैं इस हिसाब से लाखों मशीनों जो एक राज्य में प्रयुक्त हुयी होंगी, में छेड़छाड़ की जा सकती है? यहाँ यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि भारत की ईवीएम मशीनें किसी नेटवर्क से जुड़ी नहीं होतीं अतः किसी भी प्रकार की कारस्तानी तब तक नहीं की जा सकती (यदि कोई होती भी हो तो) जब तक कि एक एक मशीन छेड़खानी करने वाले के कब्जे में कुछ देर को न हो। सुरक्षा के इतने इंतजामों के मध्य लाखों मशीनों के साथ कारस्तानी हो सकती है यह सोचना भी हास्यास्पद है। अतः एम.सी.डी. दिल्ली में करारी हार के बाद अरविन्द केजरीवाल एण्ड पार्टी द्वारा ईवीएम पर दोषारोपण करना जनता में मजाक का जरिया बन गया है।

- अशोक आर्य

चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

□□□

**कहीं** पर एक फक़ीर रहता था। उसका नियम था कि वह पूरी छानबीन करने के बाद केवल उस आदमी के घर में ही भोजन करता था जिसकी कमाई नेक हो और जो सच्चा हो। एक बार वह एक कस्बे में पहुँचा और पता किया कि सबसे ईमानदार और सच्चा आदमी कौन है। पता चला कि एक व्यापारी है जो ईमानदार और सच्चा इंसान है। फक़ीर ने जब पूछा कि उसके पास कितने रुपए हैं और उसके कितने बेटे हैं तो पता चला कि उस व्यापारी के पास एक लाख रुपए हैं और उसके पाँच बेटे हैं। फक़ीर सीधे व्यापारी के घर पहुँचा और कहा कि आज वह उसके घर भोजन करेगा। व्यापारी यह जानकर बहुत प्रसन्न हुआ कि फक़ीर उसके घर भोजन करेंगे। उसने फक़ीर को आदर के साथ बिठाया। भोजन करने से पहले फक़ीर ने व्यापारी से भी पूछा कि उसके पास कितने रुपए हैं और उसके कितने बेटे हैं तो व्यापारी ने कहा कि उसके पास पचास हज़ार रुपए हैं और उसके एक बेटा है। फक़ीर उसकी बात सुनकर बिना भोजन किए ही उठकर जाने लगा।

फक़ीर जाने लगा तो व्यापारी ने पूछा, 'बाबा मुझसे क्या ग़लती हो गई जो बिना भोजन किए ही उठकर जाने लगे हो?' इस पर फक़ीर ने कहा, 'मैंने तो तुम्हें ईमानदार और सच्चा इंसान समझा था पर तुम तो बहुत झूठे निकले।' व्यापारी ने कहा, 'नहीं बाबा ऐसा नहीं है। पहले मेरी बात सुन लो। लोगों ने मेरे बारे में जो बताया है वह ठीक नहीं है। मेरे पास एक लाख रुपए हैं लेकिन अपनी नेक कमाई में से मैंने आज तक केवल पचास हज़ार रुपए ही अच्छे कामों में लगाए हैं। मेरे पाँच बेटे भी हैं लेकिन उनमें से चार आवारा, बदचलन और भ्रष्ट हैं। मेरा एक बेटा ही है जो ईमानदारी और सच्चाई के रास्ते पर चल रहा है। इसीलिए मैंने कहा है कि मेरे पास पचास हज़ार रुपए हैं और एक बेटा है।'

व्यापारी की बात सुनकर फक़ीर बहुत खुश हुआ और उसके घर ही भोजन किया। भोजन करने के बाद फक़ीर उसे ढेर सारी दुआएँ देकर आगे चला गया। ईमानदारी और सच्चाई का ऐसा आंकलन करने वाले ही वास्तव में नेक और सच्चे इंसान हो सकते हैं इसमें संदेह नहीं।

हमारे व्यावहारिक जीवन में प्रायः इसके उलट होता है। हम अपने बारे में जो समझते हैं अथवा बतलाते हैं वह भ्रामक होता है। हम जैसा अवसर देखते हैं वैसा ही वर्णन करने लगते हैं। जब हमें किसी व्यक्ति पर रौब ग़ालिब करना होता है तो हम अपनी कमाई अथवा संपत्तियों को कई गुना बढ़ा-चढ़ाकर बतलाते हैं। रिश्तेदारों की कमाई अथवा संपत्तियों को भी अपना बतलाने से गुरेज नहीं करते। हममें या हमारे परिवार के अन्य सदस्यों में चाहे कितनी भी बुराइयाँ क्यों न हों हम अपनी और अपने परिवार के अन्य सदस्यों की बेजा अच्छाइयों के गुणगान में ही लगे रहते हैं। यदि बात आयकर देने अथवा किसी की मदद करने की हो तो हम अपनी आय को कम से कम दिखाने में लग जाते हैं। जीवन में हर एक परिस्थिति में ईमानदारी और सच्चाई का सही मूल्यांकन करके ही हम ईमानदार और सच्चे इंसान बन सकते हैं झूठ अथवा लाग-लपेट से कभी नहीं।

एक सहज प्रश्न मन में उठता है कि जो हमने नेक कामों पर ख़र्च कर दिया वो हमारी असली कमाई कैसे हुई? ये तो ख़र्च ही हुआ। जब हमारे पास पैसा आता है या कमाई होती है तो हमें खुशी मिलती है। यदि हमें बहुत ज्यादा खुशी हो रही है तो इसका सीधा सा मतलब है कि ख़ूब कमाई या आमदनी हो रही है। यदि हम ध्यान से देखें तो पाएँगे कि हमें सबसे ज्यादा खुशी ज्यादा कमाई होने पर नहीं अपितु नेक काम करने पर ही मिलती है। चाहे हम अपने तन से किसी की सेवा करें या धन से किसी की मदद या दूसरा कोई नेक काम करें उसमें ही हमें सबसे ज्यादा संतुष्टि व खुशी मिलती है। इसलिए नेक काम के लिए चाहे समय दें या पैसा लगाएँ उससे मिली खुशी ही सच्ची खुशी कहलाती है। इसको समझाया नहीं जा सकता। इसको वही समझ सकता है जिसने नेक कार्य के लिए कुछ इंवेस्ट किया हो।

**- आशा गुप्ता,**
**ए डी-१०६-सी, पीतम पुरा, नई दिल्ली**

□□□

# 'स्वस्तिक' शब्द का विश्वभ्रमण

ऋग्वेद और यजुर्वेद में यज्ञ करते समय स्वस्तिवाचन के मंत्रों का पाठ करते समय स्वस्ति शब्द का वाचन सुख, आनन्द, क्षेम, कुशल आदि अर्थों के लिए प्रयुक्त किया गया है।

ब्राह्मण लोग अपने यजमान के लिए मंत्र पाठ करते, प्रायश्चित करते समय या यजमान से दक्षिणा प्राप्त करने के उपरान्त यजमान के लिए मंगल कामना या आशीर्वाद स्वरूप 'स्वस्ति' शब्द का उच्चारण करते हैं। रघुवंश, शकुन्तला

नाटक आदि प्राचीन काव्यों में यात्रा के समय सुखपूर्वक यात्रा सम्पन्न होने की अभिलाषा और मंगल की कामना 'स्वस्ति' शब्द के साथ ही प्रकट करते हैं।

स्वस्तिक शब्द इसी स्वस्ति शब्द के साथ 'अण्' धातु सूचक 'क्त' प्रत्यय से बना है। और इसका अर्थ है सुख या आनन्द का प्रदाता। अतः स्वस्तिक शब्द का सूचक卐चिह्न किसी वस्तु विशेष और प्राणी के अंगों पर अंकित किया जाता है। मालतीमाधव और शिशुपाल वध काव्यों में तो चार मार्गों के मिलन स्थल या चौराहों पर बने त्रिभुजाकार आकृति के लिए भी 'स्वस्तिक' शब्द प्रयुक्त हुआ है। उसी तरह व्यक्ति के द्वारा अपने वक्षस्थल पर

व्यत्यय रूप में अपनी भुजाओं को रखने से बनने वाली आकृति के लिए और दीपावली पर्व पर गायों और बैलों को सजाने हेतु उनकी पीठ पर क्रास के रूप में 'स्वस्तिक' अंकित किया जाता है। शिल्प शास्त्र में विशेष आकार के महल, मंदिर और ऐसे मकान के लिए जिसके आगे चबूतरा बना हो भी 'स्वस्तिक' नाम दिया गया है। जैन सम्प्रदाय के चौबीस चिह्नों में 'स्वस्तिक' चिह्न को मान्यता देते हुए उनके सातवें तीर्थंकर सुपार्श्व स्वामी के बिम्ब पर स्वस्ति का चिह्न अंकित किया जाता है। भारतवर्ष और चीन देश में साधु सन्तों का यह प्रमुख चिह्न रहा है। राजस्थान में घर के प्रमुख द्वार के छावणे (द्वारोपरि पट्टिका) में गणेश की मूर्ति परिवार के सुख सम्पत्ति की दृष्टि से स्थापित की जाती रही है। पर आज गणेश के स्थान पर गणेश के प्रतीक स्वस्तिक चिह्न बनाकर उसकी पूजा की जाती है।

भारतीय नरेशों के विजयार्थ प्रस्थान करते समय उनकी विजय और आनन्द के प्रतीक के रूप में मोतियों से 'स्वस्तिक' पुराये जाने का उल्लेख अलेक्जेंडर किल्लाक फार्स ने स्वलिखित पुस्तक रासमाला में किया है।

**(रासमाला- प्रथम भाग उत्तरार्द्धः अनुवादक गोपाल नारायण बहुरा १६५८ ई.)**

एशियन रिसर्च-बुक-६ में संभावना व्यक्त की गई है कि 'स्वस्तिक' चिह्न ने छठी शताब्दी ई. में यूरोपीय देशों में प्रवेश पाया होगा। चीन की पन्द्रहवीं शताब्दी ईस्वी. की एक हस्तलिखित पोथी में Fylopt नाम से इस चिह्न के प्रयोग का उल्लेख उक्त विद्वान् ने किया है। प्राचीन पादरियों की कब्रों पर स्वस्तिक चिह्न अंकित किया जाता था। सन् १०७७ ई. में बनाई गई एक पादरी की कब्र पर ऐसी ही आकृति का चिह्न पाया गया है। रिचार्ड द्वितीय के सिंहासनरुढ़ होने से पहले पीतल पर बनाये जाने वाली शृंगारिक आकृतियों (काम) में सामान्यतया यह चिह्न बनाया जाता था। Monuments Brasses and slabs by Rev. Charles Boutell, MA. Pub Oxford Parker, 1947 (Footnote Page. 28)

बालगंगाधर तिलक ने अपनी पुस्तक गीता रहस्य में पृ. ५६० पर C Reginold Enock की पुस्तक The Secrets of Pacific के पृ. २४८-२५२ के आधार पर लिखा है कि प्राचीन शोधकों के अनुसार मिश्र

आदि के पुरातन खण्डों में ही नहीं अपितु कोलम्बस से कुछ शताब्दियों पूर्व तक अमेरिका के पेरु और मैक्सिको देशों में भी स्वस्तिक चिह्न को शुभ माना जाता था।

पंडित रघुनन्दन शर्मा ने स्वरचित पुस्तक 'वैदिक सम्पत्ति' पृ.४५२ में स्वस्तिक चिह्न को ओ३म् का अपभ्रंश रूप मानते हुए ॐ का रूप परिवर्तन ॐ→卍. .......किया है। यह वास्तव में वामावर्त स्वस्तिक का रूप है।

डॉ. फतहसिंह राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर की पत्रिका 'स्वाहा' के वर्ष १ अंक १ पृ. १३-१४ स्वस्तिक के दक्षिणावर्त और वामावर्त दो प्रकार के, सिन्धु घाटी सभ्यता की हरप्पा और मोहेनजोदड़ो की लिपियों में, स्वस्तिक चिह्नों के प्रयोग का उल्लेख करते हुए क्रमशः वरुण और वृत्र का सूचक मानते हुए इन्हें सत्य और असत्य का वाची कहा है। उनके अनुसार उपर्युक्त दोनों ही स्थानों पर मिली + चिह्न वालों मुद्राओं पर मिले रूप से ही दक्षिणावर्त और वामावर्त स्वस्तिक चिह्न बने हैं। क्रास के + चिह्न का अधिकता से न मिलने के कारण कतिपय शोध विद्वान् इस चिह्न को बाहर से आया हुआ मानते हैं। जर्मनी के निरंकुश शासक हिटलर ने वामावर्त स्वस्तिक को अपने राष्ट्र के प्रतीक चिह्न के रूप में अपनाया था।


- डॉ. बृजमोहन जावलिया
१०१ भट्टयानी चौहट्टा, उदयपुर ३१३००१


❑❑❑


**₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें**
**''सत्यार्थ सौरभ'' के सदस्य बनें**

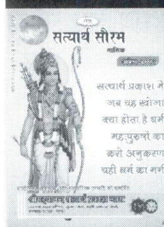

**अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।**

**पूर्ण विवरण पृष्ठ २० पर देखें।**


पूरा नाम–
चलभाष–

## सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०६/१७

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या–

**रिक्त स्थान भरिये– सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। ( षष्ठ समुल्लास पर आधारित )– पुरस्कार प्राप्त करिये**

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ज | १ | र्म १ | ■ | २ | न २ | ■ | ३ | हीं ३ |
| ■ | ४ | र्म | ४ | क्त ४ | ■ | ५ | भा ५ | | न ५ |
| ६ | जा ६ | ■ | ७ | न ७ | | य ७ | ■ | ८ | प ८ |

**संकेत ( बाएँ से दाएँ ) ऊपर से नीचे न भरें।**

१. राजा और प्रजा के अधिकार–कर्त्तव्यों और परस्पर व्यवहार को महर्षि दयानन्द ने क्या नाम दिया है?
२. वेदानुसार कितनी सभाओं का निर्माण करना चाहिये?
३. एक ही व्यक्ति को स्वतंत्र रूप से राज्य करने का अधिकार देना चाहिए अथवा नहीं?
४. सभी सभासद सभा की कैसी व्यवस्था का पालन किया करें?
५. क्या राजा भी किसी के अधीन हो सकता है? यदि हाँ तो किसके अधीन?
६. अकेले को पूर्ण सत्ता दे दी जाती है तो वह किसका नाश कर देता है?
७. जो सबका......... हो उसी को सभापति राजा करें?
८. प्राचीन साहित्य में शतघ्नी नाम किसके लिये प्रयुक्त हुआ है?

**सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०४/१७ का सही उत्तर**

| | |
|---|---|
| १. सर्वत्र | २. वानप्रस्थ |
| ३. नरकगामी | ४. उन्नति |
| ५. लक्षण | ६. स्वार्थश्रमी |

**भूल सुधार– मई अंक में सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ४/१७ के स्थान पर सत्यार्थ प्रकाश पहेली-५/१७ पढ़ें।**

**''विस्तृत नियम पृष्ठ २० पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''**

**कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ जुलाई २०१७**

**उपसर्ग** पूर्वक 'कृ' धातु से संस्कार शब्द बनता है। मानव जीवन को उच्च दिव्य एवं महान् बनाने के लिए वैदिक संस्कारों का विशेष महत्व है। मानव की शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक उन्नति के लिए जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त १६ संस्कारों को करने का विधान हमारे ऋषि महर्षियों ने वेदाज्ञा के अनुसार किया है।

**'संस्क्रियते अलंक्रियते अनेन इति संस्कार'** अर्थात् जिससे शरीर, मन एवं आत्मा अलंकृत, सुशोभित या परिष्कृत होते हैं, उत्तम और श्रेष्ठ होते हैं उसे संस्कार कहते हैं।

आज संस्कारों के अभाव में ही मानव पशु से भी निम्नतर स्तर को प्राप्त होता चला जा रहा है। उसने अपने मानवतारूप धर्म का परित्याग कर दिया है। स्वधर्म को त्यागकर अर्थ को प्राप्त करने में अपना सब कुछ न्यौछावर कर रहा है। उसकी धन के प्रति अतृप्त लालसा भाई को भाई, पिता को पिता, बहिन को बहिन नहीं समझ रही है, परिवार टूट रहे हैं।

अभाव में भी स्वयं को सुखी अनुभव करता है क्योंकि संस्कारों के द्वारा ही 'शरीर, मन एवं आत्मा उत्तम बनते हैं।' किसी वस्तु के पुराने स्वरूप को बदलकर उसे नवीन स्वरूप संस्कारों के द्वारा प्रदान किया जाता है। महर्षि चरक लिखते हैं **'संस्कारो हि गुणान्तराधान मुच्यते'** अर्थात् पहले से विद्यमान दुर्गुणों एवं दोषों को हटाकर उनके स्थान पर सद्गुणों के आधान करने को संस्कार कहते हैं। जिससे कि उसका स्वास्थ्य उत्तम बने तथा मन में पवित्र भावना हो और सत्कर्मों को करके शारीरिक एवं आत्मिक उन्नति करता हुआ शरीर मन और आत्मा को सद्गुणों से अलंकृत करे।

जब बालक का जन्म होता है तब वह दो प्रकार के संस्कार अपने साथ लेकर आता है एक तो वे संस्कार हैं जिन्हें वह जन्म जन्मान्तरों से अपने साथ लाता है और दूसरे वे हैं जिनको अपने माता पिता से संस्कारों के रूप में वंश परम्परा से प्राप्त करता है ये अच्छे भी हो सकते हैं और बुरे भी हो सकते हैं।

# जीवन में संस्कारों का महत्व

- आचार्य विश्वेन्द्रार्य -

आज एक दूसरे के लिए स्वप्राणों को भी न्यौछावर करने वाले राम, लक्ष्मण, भरत जैसे भाई श्रवण कुमार के समान मातृ-पितृ भक्त, भीष्म के समान दृढ़ प्रतिज्ञ, हरिश्चन्द्र जैसे सत्यनिष्ठ, दयानन्द जैसा त्यागी, तपस्वी, समाज सुधारक एवं अखण्ड ब्रह्मचारी दूर-दूर तक दृष्टिगोचर नहीं हो रहे हैं।

मानव को सुखी बनाने के लिए अनेकों प्रकार के भौतिक साधनों को उपलब्ध कराया जा रहा है क्योंकि आज के मानव की दृष्टि केवल भौतिक उन्नति तक ही सीमित रह गई है। हम भौतिकवादी दृष्टिकोण के कारण समझ बैठे हैं कि मानव का सबसे बड़ा प्रश्न रोटी का प्रश्न है। यदि रोटी का प्रश्न हल हो गया तो सभी समस्याओं का समाधान हो गया। लेकिन भोजन, आजीविका एवं भौतिक साधन प्राप्त कर लेने पर भी संस्कारों के अभाव में व्यक्ति सुखी नहीं हो सकता ये शाश्वत सत्य है। संस्कारवान व्यक्ति भौतिक साधनों के

वैदिक संस्कार मानव निर्माण की एक उत्तम योजना है। इस योजना में बालक को इस प्रकार के वातावरण से घेर दिया जाता है जिससे केवल अच्छे संस्कारों के पनपने का ही अवसर मिलता है, बुरे संस्कार चाहे पिछले हों या इस जन्म के हों अथवा माता, पिता या मित्रों से प्राप्त हुए हों उन्हें निर्बीज कर दिया जाता है।

जिस प्रकार सोना, चांदी, लोहा आदि धातुओं को अग्नि में डाल देने से उनकी अशुद्धता नष्ट होकर वे शुद्ध एवं निर्मल हो जाते हैं, ठीक इसी प्रकार से वैदिक संस्कारों के माध्यम से बालक, बालिका के विगत जन्मों के अशुभ कर्मों के वासनारूपी दोषों को दूर कर दिया जाता है और उन्हें सद्गुणों से युक्त कर दिया जाता है जिससे कि वह मानव जीवन के मुख्य लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त कर सके।

जीवात्मा जन्म जन्मान्तरों में अनेक प्रक्रियाओं से गुजरता है। प्रत्येक जन्म में इस पर अच्छे या बुरे संस्कार पड़ते हैं। वैदिक संस्कृति में आत्मा के पूर्व जन्मों के अशुभ संस्कारों को शुभ संस्कारों के प्रभाव द्वारा समाप्त कर दिया जाता है। जिस समय एवं जिस क्षण भी जीवात्मा मानव शरीर के बन्धन में बँधता है उसी समय और उसी क्षण वैदिक संस्कृति उस पर उत्तम संस्कार डालना आरम्भ कर देती है और जीवात्मा जब तक उस मानव शरीर में विद्यमान रहता है तब तक उस पर श्रेष्ठ संस्कार निरन्तर डाले जाते हैं। क्योंकि जिन संस्कारों का प्रभाव उस जीवात्मा पर अधिक होगा वह उसी प्रकार का आगे आचरण करेगा। उसके पूर्व जन्म जन्मान्तरों के संस्कार यदि अशुभ हैं तो उनको शुभ संस्कारों के अत्यधिक प्रभाव से दबा दिया जाता है।

उदाहरण के लिए दूब घास के तिनकों में अपनी गंध है लेकिन केसर की गंध की अपेक्षा से कम है। यदि दोनों को एक साथ रख दिया जाता है तो दूब घास स्वयं की गन्ध कम होने के कारण केसर की गन्ध को ग्रहण कर लेती है और दूब से भी केसर की ही गन्ध आने लगती है। उसी प्रकार केसर की गन्ध कम है प्याज की गन्ध की अपेक्षा से। यदि कुछ दिनों तक केसर एवं प्याज को एक साथ रख दिया जाता है तो केसर की गन्ध दब जाती है और उसमें से भी प्याज की गन्ध आने लगती है तो पता चला कि जिसका अधिक प्रभाव है वह कम प्रभाव वालों पर स्वयं का प्रभाव डालने में समर्थ होता है।

**"संस्कारों के द्वारा ही शरीर, मन एवं आत्मा उन्नत बनते हैं। - सत्यार्थप्रकाश"**

इसी प्रकार पूर्व जन्मों के अशुभ संस्कारों को भी वैदिक संस्कारों की अधिकता के कारण निर्बीज कर दिया जाता है। अतः श्रेष्ठ संस्कारों का प्रभाव मानव के जीवन पर्यन्त उसकी आत्मा पर विद्यमान रहता है।

जन्म से तो सभी शूद्र होते हैं लेकिन (संस्काराद् द्विज उच्यते) संस्कारों के द्वारा ही मनुष्य द्विज अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य कहलाने का अधिकारी बनता है।

महर्षिप्रवर देव दयानन्द लिखते हैं 'जिस करके शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं और सन्तान अत्यन्त योग्य होते हैं इसलिए संस्कारों का करना अति उचित है।' (संस्कार विधि भूमिका)

अतः स्पष्ट है कि संस्कारों के द्वारा ही शरीर, मन एवं आत्मा उत्तम बनते हैं और जब शरीर, मन एवं आत्मा उत्तम बन जायेंगे तो संतानों को भी अत्यन्त योग्य बनाया जा सकता है और जीवन के सर्वोपरि लक्ष्य मोक्ष सुख को भी प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए सम्पूर्ण मानव जाति का परम कर्तव्य है कि जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त स्वयं को उत्तम संस्कारों से घेरे रखें। क्योंकि संस्कारों से ही जीवन उच्च, दिव्य एवं महान् बनता है।

**धर्माचार्य- आर्य समाज कमला नगर, आगरा**
**प्रेषक- प्राच्य वैदिक परिवार, ऊँचा गाँव,**
**पत्रा. नसीरपुर, हाथरस, उत्तरप्रदेश**
**चलभाष- ९७१९१५४६१५/९६९०६२४२३९**

□□□

## संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए.

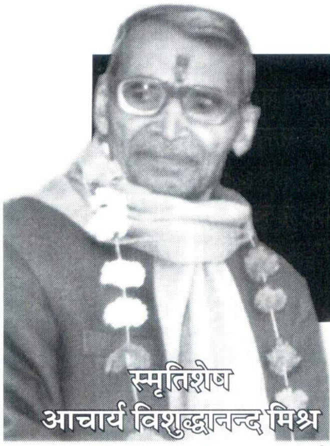

स्मृतिशेष
आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र

# ब्राह्मणग्रन्थ वेद नहीं हैं

१. श्री करपात्री जी द्वारा लिखित वेदार्थ पारिजात के पृ.- ४८८ पर 'और यह जो कहा कि वेद पद से मंत्र ब्राह्मण समुदाय का ही ग्रहण है', सो केवल आपस्तम्ब सूत्र के अनुसार ही ठीक हो सकता है, **वास्तव में तो ब्राह्मणग्रन्थ वेद नहीं है, क्योंकि वे तो वेदों के व्याख्यान ग्रन्थ हैं।** व्याख्यान ग्रन्थ कदापि मूल ग्रन्थ नहीं होता, जैसा कि सायणाचार्य ने काण्व-संहिता के भाष्य में कहा हैः- शतपथ ब्राह्मण मंत्रों का व्याख्यान रूप है, व्याख्येय, मंत्रों का प्रतिपादक संहिता ग्रन्थ है। जो पूर्व होने के कारण प्रथम है, इस प्रकार व्याख्यान और व्याख्येय ग्रन्थ की एकरूपता और एक-कालिकता न होने से ब्राह्मणग्रन्थ वेद नहीं।

२. चिरकाल से वेद पुस्तकों पर वेद शब्द ही लिखा चला आ रहा है, ब्राह्मण पुस्तकों पर नहीं। अतः ब्राह्मण वेद नहीं।

३. यास्काचार्य को- 'इसके (निरुक्त के) बिना मंत्रों में अर्थ का बोध नहीं हो सकता' इस वाक्य में मंत्र से वेद ही अभीष्ट है ब्राह्मण नहीं तथा ब्राह्मणों के द्वारा (मन्त्र) रूप-सम्पन्न किये जाते है, इस यास्कीय कथन से मंत्र और ब्राह्मण दो भिन्न पदार्थ हैं, एक नहीं।

४. महर्षि-पंतजली के कथनानुसार आम्नाय (वेद) में वाम शब्द का स्वर नियत है, वर्णानुपूर्वी भी निश्चित है। स्वर और वर्णानुपूर्वी ब्राह्मण ग्रन्थों में नियत नहीं होती, अतः ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नहीं।

५. ब्राह्मण-ग्रन्थ अपने को वेद रूप में प्रतिपादित नहीं करता, अपितु इस बात का विरोध करता है। जैसे किः- शतपथ में होता 'विश्ववेदस होता' है .........जो मनुष्य यज्ञ करते हैं, वे समृद्धि रहित यज्ञ करते हैं, समृद्धि रहित मानुष यज्ञ न करूँ' इत्यादि तथा च अपरिवर्तनीय अमानुष मंत्र को यज्ञ में पढ़े, ब्राह्मण में तो मानुष मंत्र होता है।' इस कथन से भी ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नहीं।

६. वैशेषिक दर्शन में- वेद में बुद्धि-पूर्वक वाक्य की रचना होती है (८/१/१) तथा 'ब्राह्मणों में वेदान्त संज्ञा, और कर्म का निरूपण, अर्थ की सिद्धि में लिंग है' (वैशे.६/१/२) इन दो सूत्रों की भिन्न-भिन्न रचना के कारण ब्राह्मण-ग्रन्थ वेद नहीं। प्रथम सूत्र में 'वेदे' और द्वितीय में 'ब्राह्मणे' शब्दों का प्रयोग करने से वेद और ब्राह्मणों की भिन्नता सूचित है। तथा भेद के ही कारण महीदास आदि ऋषियों ने ऐतरेयादि ब्राह्मणों में वेदोक्त संज्ञा और कर्मों का निरूपण किया है।

७. सर्वानुक्रमणिका में विनियोग के योग्य तीन प्रकार का (ऋग्यजुः सामरूपमन्त्र दिखाया जाता है तथा वेदों में त्रयी विद्या का अनुशीलन करें, कहा है, पर ब्राह्मण ग्रन्थों में ऋग्, यजुः साम रूप मंत्र नहीं होता और न त्रयी विद्या होती है। अतः ब्राह्मण वेद नहीं।

८. व्याकरण महाभाष्य और गोपथ ब्राह्मण में चार वेदों के प्रथम मंत्र अग्निमीडे.......... इषे त्वोर्जे.......... अग्न याहि.......... शन्नोदेवी.......... उद्धृत किये हैं। यदि ब्राह्मण ग्रन्थों का भी वेदत्व होता तो उनके भी वेदवत् कुछ न कुछ अंश अवश्य उद्धृत किये होते।

९. 'मंत्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्' यह केवल याज्ञिकी परिभाषा है, जो ब्राह्मणभागमिश्रित कृष्ण यजुर्वेद की शाखाओं के श्रौतसूत्रों के परिशिष्ट भाग में परिकल्पित हैं, और ब्राह्मणग्रन्थों के रचना काल से परकालवर्ती होने से तथा ब्राह्मण मिश्रित कृष्णयजुः के वेद रूप में लोक प्रसिद्ध न होने से ब्राह्मण ग्रन्थों के वेदत्व को सिद्ध करने में समर्थ नहीं है। इस परिभाषा के निर्माण काल से पूर्व यह नियम नहीं था यह बात भी इससे निकलती है।

**करपात्री जी द्वारा लिखित पुस्तक 'वेदार्थ पारिजात' जिसमें महर्षि दयानन्द की वेद सम्बन्धी मान्यताओं पर प्रश्न चिह्न खड़े करने के प्रयास किए गये थे का समुचित अकाट्य उत्तर आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् स्मृतिशेष पं. विशुद्धानन्द जी मिश्र ( अध्यक्ष- धर्मार्य सभा, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली ) द्वारा 'वेदार्थ कल्पद्रुम' लिखकर दिया। जो एक बेजोड़ कृति है। प्रस्तुत अंश में 'ब्राह्मण ग्रन्थ वेद में परिगणित नहीं है' इस तथ्य को भलीभाँति आचार्य जी द्वारा निरुपित किया गया है।** - सम्पादक

१०. इसके अतिरिक्त ऐतरेय ब्राह्मण में नामोल्लेख पूर्वक वेदों की उत्पत्ति का वर्णन है जैसे कि 'तानि ज्योतींषि' इत्यादि स्थल में वेदों की उत्पत्ति बतलाई है। इस प्रकार जब स्वयं ब्राह्मण ग्रन्थ अपने को वेदों से पृथक् मानता हुआ वेदों की उत्पत्ति का वर्णन करता है, तब ब्राह्मण ग्रन्थों को वेद किस प्रकार माना जा सकता है; अतः इस विषय में इतना ही पर्याप्त है।

❑❑❑

साभार- वेदार्थ-कल्पद्रुम

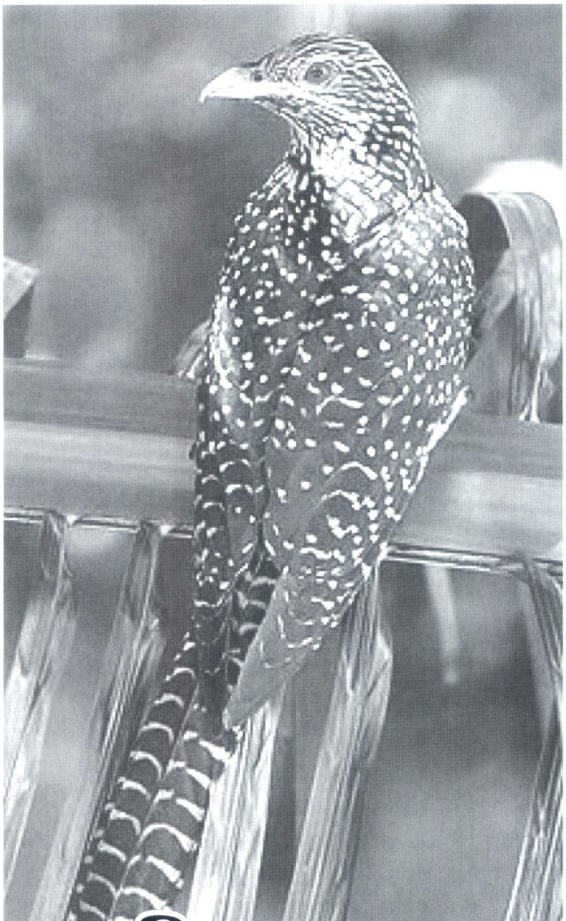

# वाणी का महत्व

वाणी का मनुष्य के जीवन में बहुत महत्व है। वाणी से बोली गई भाषा वक्ता के भावों की संवाहक होती है। वाणी द्वारा ही मनुष्य अपने भावों को दूसरे के मन में संप्रेषित कर सकता है। वाणी मनुष्य के चरित्र को दर्शाती है और मनोभावों का प्रकटीकरण करती है। वाणी से ही सुख और दुःख उपजते हैं और मनुष्य की शान्ति और अशांति का सीधा संबंध मनुष्य की वाणी से होता है। तीरों तलवारों से लगे घाव समय के साथ भर जाते हैं लेकिन कटु वाणी से मन पर लगा घाव कभी नहीं भरता। इसका इतिहास प्रसिद्ध उदाहरण द्रोपदी का व्यंग्य 'अंधा का पुत्र अंधा' है जिससे महाभारत के युद्ध की नींव पड़ गई थी।

इसीलिए कहा जाता है कि मनुष्य को सदा तोल मोल कर बोलना चाहिए। ऋग्वेद में मंत्र आया है-

**सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत।**
**अत्रा सखायः सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि।।**

- ऋग्वेद १०/७१/२

अर्थात् जैसे चलनी में छान कर सत्तु को साफ किया जाता है उसी प्रकार बुद्धिमान लोग ज्ञानरूपी चलनी द्वारा वाणी को शुद्ध करके प्रयोग करते हैं और हितैषी विद्वान् लोग हित की बातों को समझाते हैं। उनकी वाणी में कल्याणप्रदा लक्ष्मी रहती है। इस वेद मंत्र में दो सामान्य सी घर की दैनिक प्रयोग की वस्तुओं सत्तु और चलनी की उपमा दी गई है। जिस प्रकार सत्तु को चलनी से छानकर तिनके रेत आदि इतर पदार्थों को निकाल दिया जाता है या फिर ना पचने के योग्य कर्कश अंश छान लिए जाते हैं और शुद्ध सत्तु जो कि रेत, कंकर आदि इतर पदार्थों तथा मोटे अपाच्य पदार्थों से मुक्त हो जाता है वह स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त लाभकारी होता है। इस उपमा का प्रयोग वाणी और बुद्धि जैसे सूक्ष्म उपमेयों के लिए किया गया है। वेदमंत्र बड़े स्पष्ट रूप से इस उपमा के माध्यम से संदेश देता है कि मनुष्य को वाणी का प्रयोग बड़ी सावधानी से बुद्धि की चलनी से छानकर करना चाहिए और कभी भी असत्य चाहे वह प्रिय ही क्यों ना हो जैसे इतर पदार्थों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। साथ ही साथ अप्रिय कटु सत्य का प्रयोग करने से बचना चाहिए। जैसे काने को काना कहना चाहे सत्य ही क्यों ना हो लड़ाई मोल लेने के समान है। कठोर शब्दों में कहे गए हितकर वाक्यों को सुनकर भी मनुष्य रुष्ट हो जाता है। कटु वचन क्रोध की अग्नि में ईंधन के समान उसे भड़का देते हैं जबकि विनम्र कोमल सत्य क्रोध की अग्नि पर शीतल जल के छींटे के समान होता है। इसीलिए कहा गया है-

**सत्यम् ब्रूयात् प्रियम् ब्रूयात्।**

अर्थात् सत्य बोलें प्रिय बोलें किन्तु अप्रिय सत्य या प्रिय असत्य ना बोलें। किसी के साथ व्यर्थ वैर और शुष्क विवाद ना करें। प्रिय होने पर भी जो वचन हितकर ना हो उसे नहीं कहना चाहिए और हितकर बात चाहे सुनने में अप्रिय ही क्यों ना लगे अवश्य कह देनी चाहिए क्योंकि मलेरिया ज्वर की अवस्था में कुनीन की कड़वी दवा भी मीठी औषधि के समान होती है।

वाणी का संयम मनुष्य के जीवन का आभूषण है। व्यर्थ व अनुपयोगी बोलना भी अनुचित होता है। जो व्यक्ति उपयोगी और अनुपयोगी का अंतर समझ लेते हैं वह कभी व्यर्थ शब्द व्यक्त नहीं करते। महात्मा विदुर ने कहा कि कम बोलने से मन की शक्ति बढ़ती है। प्रश्न का समय पर उपयुक्त उत्तर देना आनन्द प्रदान करता है और उचित समय पर कही गई बात ज्यादा वजन रखती है। सही कहा गया है कि पशु ना बोलने के कारण और मनुष्य व्यर्थ कटु बोलने के कारण कष्ट उठाते हैं। जो व्यक्ति अपने मुख और जिह्व पर संयम रखता है वह अपनी आत्मा को संतापों से बचाता है। महात्मा गाँधी ने कहा कि मौन से अच्छा भाषण दूसरा कोई नहीं फिर भी यदि बोलना पड़े तो जहाँ एक शब्द से काम चलता हो वहाँ दूसरा शब्द नहीं बोलना चाहिए। मौन का महत्व तो उस अज्ञानी से पूछो जो

ज्ञानियों की सभा में जा बैठा हो। जो इंसान तोल मोल कर नहीं बोलता उसे अक्सर कटु वचन सुनने पड़ते हैं। प्रत्येक स्थान और समय बोलने के योग्य नहीं होता कभी-कभी मौन वाणी से अधिक प्रभावी सिद्ध होता है। इसीलिए कहा जाता है कि धैर्यपूर्वक सबकी बात ध्यान से सुनो परन्तु अपनी सलाह बिना माँगे मत दो और केवल थोड़े ही उन मनुष्यों को दो जो धैर्यपूर्वक सुनकर उसके अनुसार कार्य करें।

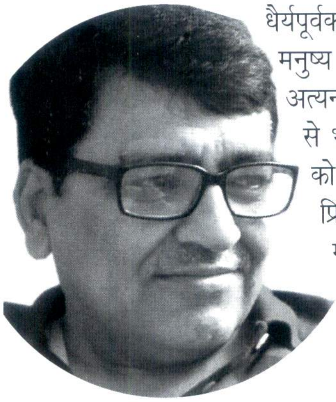

मनुष्य की वाणी का मनुष्य जीवन में अत्यन्त महत्व है। वाणी भाषा के माध्यम से भावों की संवाहक बनती है। मनुष्य को सदा बुद्धि की चलनी से छान कर प्रिय सत्य ही बोलना चाहिए। शब्द का महत्व समझें और व्यर्थ शब्दों का प्रयोग कदापि ना करें।


- नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'
६०२ जी एच ५३
सैक्टर २०, पंचकूला
मो. ०९४६७६०८६८८६, ०१७२४००१८९५


❑❑❑


## सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

• **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-

• सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

| राशि | प्रतियों की संख्या | राशि | प्रतियों की संख्या |
|---|---|---|---|
| १५०००० | दस हजार | ११२५०० | ७५०० |
| ७५००० | ५००० | ३७५०० | २५०० |
| १५००० | १००० | इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे। | |

**आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा।** राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य — मंत्री-न्यास
भंवरलाल गर्ग — कार्यालय मंत्री
डॉ.अमृत लाल तापड़िया — उपमंत्री-न्यास

**न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश**
**अब ४००० रु. सैकड़ा**
**सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग अब**
**एक हजार प्रतियों के लिए १५००० रु.**


## आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्यांमार) स्मृति पुरस्कार

## "सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

### कौन बनेगा विजेता

☞ न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
☞ हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
☞ अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
☞ लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
☞ आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
☞ विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
☞ वर्ष भर में एक ( १ ) के स्थान पर चार ( ४ ) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
☞ पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।

( अ ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
( ब ) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
( स ) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
( द ) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।

☞ वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन ( लाटरी द्वारा ) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
☞ पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।


अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

**सत्यार्थप्रकाश**

अवश्य खरीदें।

**अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०**

[redacted]

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१

(विश्व पर्यावरण दिवस (५ जून) पर विशेष)

# पर्यावरण के साथ तादात्म्य जरूरी

कृष्ण कुमार यादव

मानव सभ्यता के आरंभ से ही प्रकृति के आगोश में पला और पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति सचेत रहा। पर जैसे-जैसे विकास के सोपानों को मानव पार करता गया, प्रकृति का दोहन व पर्यावरण से खिलवाड़ रोजमर्रा की चीज हो गई। ऐसे में आज समग्र विश्व में पर्यावरण असंतुलन चर्चा व चिन्ता का विषय बना हुआ है। जलवायु परिवर्तन, भूस्खलन,

भूकंप, बाढ़, सूखा इत्यादि आपदाओं के कारण तमाम देशों की अर्थव्यवस्था को काफी नुकसान हो रहा है। **पेड़ों की अंधाधुंध कटाई एवं ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन के कारण सारी दुनिया आज पर्यावरण के बढ़ते खतरे से जूझ रही है।** मनुष्य और पर्यावरण का संबंध काफी पुराना और गहरा है। प्रकृति और पर्यावरण, हम सभी को बहुत कुछ देते हैं, पर बदले में कभी कुछ माँगते नहीं। पर इसके बावजूद हम रोज प्रकृति व पर्यावरण से खिलवाड़ किये जा रहे हैं और उनका ही शोषण करने लगते हैं। हमें हर किसी के बारे में सोचने की फुर्सत है, पर प्रकृति और पर्यावरण के बारे में नहीं। प्रकृति को हमने भोग की वस्तु समझ लिया है **पर यह नहीं भूलना चाहिए कि पर्यावरण के अस्तित्व पर जब खतरा आता है तो उसका खामियाजा मानव को ही भुगतना पड़ता है।**

पर्यावरण असंतुलन के प्रति चेतना जागृत करने एवं धरती पर पर्यावरण को समृद्ध बनाने, पर्यावरण संरक्षण और पर्यावरण से जुड़े मुद्दों को मानवीय रूप प्रदान करने हेतु संयुक्त राष्ट्रसंघ के तत्वावधान में हर वर्ष ५ जून को 'विश्व पर्यावरण दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इसका प्रमुख उद्देश्य विभिन्न देशों के बीच पर्यावरण संरक्षण के मुद्दे पर पारस्परिक सहयोग को बढ़ावा देना एवं पर्यावरण के प्रति राजनैतिक-सामाजिक-आर्थिक जागरूकता लाते हुए सभी को इसके प्रति सचेत व शिक्षित करना एवं पर्यावरण-संरक्षण के प्रति प्रेरित करना है। इस दिवस की शुरूआत संयुक्त राष्ट्र संघ की आम सभा के द्वारा वर्ष १९७२ में स्टॉकहोम में मानव पर्यावरण पर आयोजित कांफ्रेंस में की गई थी। विश्व भर में इस दिन सतत् विकास की प्रक्रिया में आम लोगों को शामिल करने के मद्देनजर विश्व पर्यावरण दिवस पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिनका मुख्य उद्देश्य विश्व समुदाय का ध्यान पर्यावरण और उससे जुड़ी राजनीति की ओर आकृष्ट करना होता है। १९७२ में ही संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम का भी आरम्भ किया गया। गौरतलब है कि यह पहला ऐसा मौका था, जब विश्व पर्यावरण और उससे जुड़ी राजनीति, आर्थिक और सामाजिक समस्याओं पर इतने बड़े मंच पर चर्चा हुई थी। विश्व पर्यावरण दिवस पर विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से इस बात पर खास जोर दिया जाता है कि पर्यावरण और उससे जुड़े मुद्दों के प्रति आम धारणा बदलने में समुदाय महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) द्वारा प्रतिवर्ष विभिन्न थीमों पर विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन किया जाता है।

बदलती जीवनशैली, उपभोग के तरीके एवं सीमित प्राकृतिक संसाधनों और पारस्थितिकी तंत्र पर बढ़ने वाला दबाव प्राकृतिक असंतुलन के ये सबसे बड़े कारण हैं। विकास की अंधी दौड़ में समाज परम्पराओं से कटता जा रहा है। एक समय हम नदियों को माँ समझते थे किन्तु आज भावनाएँ

बदल गई हैं। खुद के लाभ के लिए मानव पर्यावरण का दोहन कर रहा है। यहाँ तक कि प्रदूषण से कई जीवों का अस्तित्व संकट में है। हम नित धरती माँ को अनावृत्त किये जा रहे हैं। जिन वृक्षों को उनका आभूषण माना जाता है, उनका खात्मा किये जा रहे हैं। वृक्ष न सिर्फ हमारे पर्यावरण को शुद्ध करते हैं, बल्कि जीवन के लिए उपयोगी प्राणवायु उपलब्ध कराते हैं। **यह कहना अतिश्योक्ति नहीं कि पेड़-पौधों और वनस्पतियों के कारण ही हम जीवित हैं।** वृक्ष शिव का काम भी करते हैं, वे वायुमंडल की घातक जहरीली गैसों को स्वयं पी जाते हैं और हमें जीवन-वायु प्रदान करते हैं। सभी जानते हैं कि जिन देशों ने प्रकृति और पर्यावरण का अत्यधिक दुरुपयोग व दोहन किया, उन्हें आपदाओं के रूप में प्रकृति का कोप भाजन भी बनना पड़ा। फिर भी विकास की इस अंधी दौड़ के पीछे धरती के संसाधनों का जमकर दोहन किये जा रहे हैं।

आबादी बढ़ने से प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ा है और प्राकृतिक संसाधनों के स्त्रोत सीमित होने के कारण भविष्य को लेकर चिन्ताएँ बढ़ी हैं। इसके बावजूद हमने अंधाधुंध विकास की जगह वैकल्पिक समाधान को नहीं अपनाया है। टिकाऊ विकास की चुनौती आज भी हमारे सामने बनी हुई है। वैश्वीकरण की नव उदारवादी नीति ने हमारे सामने बहुत-सी चुनौतियाँ खड़ी कर दी हैं, जिससे आर्थिक विकास के मॉडल लड़खड़ाने लगे हैं। खाद्य असुरक्षा ने न केवल गरीब देशों, बल्कि संपन्न देशों को भी परेशानी में डाल दिया है। जैव-विविधता से जुड़े संकटों ने भी आर्थिक विकास पर असर दिखाया है। आज हमारे सामने विकास बनाम पर्यावरण का मुद्दा है। हमारे लिए दोनों जरूरी हैं, इसलिए समन्वित दृष्टिकोण के साथ विकास कार्यक्रमों को आगे बढ़ाना चाहिए।

विकास व प्रगति के नाम पर जिस तरह से पर्यावरण को हानि पहुँचाई जा रही है, वह बेहद शर्मनाक है। हम जिस धरती की छाती पर बैठकर इस प्रगति व लम्बे-लम्बे विकास की बातें करते हैं, उसी छाती को रोज घायल किये जा रहे हैं। हम कभी साँस लेना नहीं भूलते, पर स्वच्छ वायु के संवाहक वृक्षों को जरुर भूल गए हैं। यही कारण है कि नित नई-नई बीमारियाँ जन्म ले रही हैं। इन बीमारियों पर हम लाखों खर्च कर डालते हैं, पर अपने पर्यावरण को स्वस्थ व स्वच्छ रखने के लिए पाई तक नहीं खर्च करते। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि वनस्पतियों का सिर्फ रंग ही हरा नहीं होता, उन्हीं से हमारा जीवन भी हरा-भरा है। हमारे जीवन-दर्शन में प्राचीन काल से इनकी व्यापक उपस्थिति दर्ज है। अथर्ववेद औषधीय दृष्टि से जड़ी-बूटियों की महत्ता के बहाने वनस्पतियों की अनिवार्यता को स्थापित करता है तो श्रीराम की कथा में वनों और वहाँ के जीवों के माध्यम से अद्भुत दर्शन निर्मित हुआ है। इसी तरह श्रीकृष्ण तो कदंब की डालों पर ही नहीं विराजते, बल्कि बांसुरी के रूप में वनस्पति की महत्ता बताते हैं। वट सावित्री की कथा से लेकर तमाम धार्मिक-सांस्कृतिक आख्यान तक हमें पर्यावरण-संरक्षण की शिक्षा देते हैं और हमारे भीतर इसकी एक दृढ़ मनोभूमि भी रचते चलते हैं।

भारतीय परंपरा में पेड़-पौधों को परमात्मा का प्रतीक मान कर उनकी पूजा का विधान बनाया गया है। वैदिक ऋचाओं में इनके महत्व को बताया गया है। शास्त्रों में पृथ्वी, आकाश, जल, वनस्पति एवं औषधि को शांत रखने को कहा गया है। इसका आशय यह है कि इन्हें प्रदूषण से बचाया जाए। यदि ये सब संरक्षित व सुरक्षित होंगे तो निश्चित रूप से जीवन और जगत् भी सुरक्षित व सुखी रह सकेंगे। वृक्ष न सिर्फ धरती के आभूषण हैं बल्कि मानवीय जीवन के आधार भी हैं। वृक्ष हमें प्रत्यक्ष रूप से फल-फूल, चारा, कोयला, दवा, तेल इमारती लकड़ी के साथ जलाने की लकड़ी इत्यादि प्रदान करते हैं। वृक्ष से हमें वायु शुद्धीकरण, छाया, पशु प्रोटीन, ऑक्सीजन के अलावा भी कुछ ऐसी चीजें मिलती हैं जिन्हें प्राप्त करने के लिए हमें लाखों रुपये खर्च करने पड़ते। एक सर्वे के अनुसार एक वृक्ष अपने जीवनकाल में जितनी वायु को शुद्ध करता है उतनी वायु को अप्राकृतिक रूप अर्थात् मशीन से शुद्ध किया जाय तो लगभग ५ लाख रूपये खर्च करना पड़ेगा। इसी तरह वृक्ष छाया के रूप में ५० हजार, पशु-प्रोटीन चारा के रूप में २० हजार, ऑक्सीजन के रूप में २.५ लाख, **जल सुरक्षा चक्र के** रूप में ५ लाख एवं भूमि सुरक्षा के रूप में २.५ लाख के साथ हमारे स्वस्थ जीवन के लिए कुल १५ लाख ७० हजार रुपये का लाभ पहुँचाता है। पर आज का मानव इतना निष्ठुर हो चुका है कि वृक्षों के इतने उपयोगी होने के बाद भी

थोड़े से स्वार्थ व लालच में उन्हें बेरहमी से काट डालता है। जरूरत है कि लोग इस मामले पर गम्भीरता से सोचें एवं संकल्प लें कि किसी भी शुभ अवसर पर वे वृक्षारोपण अवश्य करेंगे अन्यथा वृक्षों के साथ-साथ मानव-जीवन भी खतरे में पड़ जायेगा।

विश्व पर्यावरण दिवस पर लम्बे-लम्बे भाषण, दफ्ती पर स्लोगन लेकर चलते बच्चे, पौधारोपण के कुछ सरकारी कार्यक्रम.... अखबारों में पर्यावरण दिवस को लेकर यही कुछ दिखेगा और फिर हम भूल जायेंगे। एक दिन बिटिया अक्षिता बता रही थी कि स्कूल में टीचर ने पर्यावरण असंतुलन के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि पहले जंगल होते थे तो खूब हरियाली होती, बारिश होती और सुन्दर लगता पर अब जल्दी बारिश भी नहीं होती, खूब गर्मी भी पड़ती है...लगता है भगवान जी नाराज हो गए हैं। इसलिए आज सभी लोग संकल्प लेंगे कि कभी भी किसी पेड़-पौधे को नुकसान नहीं पहुँचायेंगे, पर्यावरण की रक्षा करेंगे, अपने चारों तरफ खूब सारे पौधे लगायेंगे और उनकी नियमित देख-रेख भी करेंगे। अक्षिता के नन्हे मुँह से कही गई ये बातें मुझे देर तक झकझोरती रहीं। आखिर हम बच्चों में प्रकृति और पर्यावरण की सुरक्षा के संस्कार क्यों नहीं पैदा करते। मात्र स्लोगन लिखी तख्तियाँ पकड़ाने से पर्यावरण का उद्धार संभव नहीं है। इस ओर सभी को संजीदगी से सोचना होगा। निश्चिततः भारत समेत पूरे विश्व को इस दिवस को एक पवित्र अभियान से जोड़ते हुए न सिर्फ वृक्षारोपण की तरफ अग्रसर होना चाहिए बल्कि ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने की दिशा में भी प्रभावी कदम उठाने होंगे।

पर्यावरण का मतलब केवल पेड़-पौधे लगाना ही नहीं है, बल्कि भूमि प्रदूषण, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण व ध्वनि प्रदूषण को भी रोकना है। हम प्राकृतिक संसाधनों का कम से कम दोहन करें और प्रकृति के साथ खिलवाड़ न करें। हर

इंसान को धरती के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी, तभी पर्यावरण संतुलन की दिशा में कुछ ठोस किया जा सकता है। जिस प्रकार से हम औद्योगिक विकास और भौतिक समृद्धि की ओर बढ़ रहे हैं वह पर्यावरण संतुलन के लिए खतरनाक है। पर्यावरण असंतुलन के कारण ही सुनामी और भंयकर आँधी-तूफान आते हैं। धरती का तापमान लगातार बढ़ रहा है, जिसके कारण पशु-पक्षियों की कई प्रजातियाँ लुप्त हो गई हैं। इनकी घटती संख्या पर्यावरण के लिए घातक है।

स्वच्छ पर्यावरण जीवन का आधार है और इसके बिना जीवन का अस्तित्व ही खतरे में पड़ सकता है। पर्यावरण जीवन के प्रत्येक पक्ष से जुड़ा हुआ है, इसीलिए यह जरूरी है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने पर्यावरण के प्रति जागरूक रहे। वास्तव में देखा जाय तो पर्यावरण शुद्ध रहेगा तो आचरण भी शुद्ध रहेगा। लोग निरोगी होंगे और औसत आयु भी बढ़ेगी। दुर्भाग्यवश पृथ्वी, पर्यावरण, पेड़-पौधे हमारे लिए दिनचर्या नहीं अपितु पाठ्यक्रमों का हिस्सा बनकर रह गए हैं। ऐसे में यदि मनुष्य ने अपनी दिनचर्या प्रकृति के अनुरूप नहीं बनाया और प्रदूषण इसी तरह बढ़ता रहा तो तमाम सभ्यताओं का अस्तित्व खत्म होने में देर नहीं लगेगी।

**निदेशक डाक सेवाएँ**
**राजस्थान पश्चिमी क्षेत्र**
**जोधपुर-३४२००१**
**मो0-०९४१३६६६५९९**

❑❑❑

**नवलखा महल में नवनिर्मित ''आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा'' एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार**

भारतीय इतिहास की इतनी अधिक जानकारी एक जगह मिलना दुर्लभ है इस जानकारी से भरी प्रदर्शनी का मेरे हिसाब से कोई मोल नहीं है। परन्तु इसका जो शुल्क रखा गया है उसे बढ़ाना चाहिए ताकि उसी धन से यहाँ पर जानकारी को और बढ़ाया जा सके। अति सुन्दर जानकारी के लिए हृदय से धन्यवाद।

**- अमित राज, भीलवाड़ा**

इस भव्य चित्रप्रदर्शनी के माध्यम से अमूल्य जानकारी प्राप्त कर हम बहुत अभिभूत हुए। आर्य समाज एवं स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं से वास्तव में विश्व को एक नई दिशा दी जा सकती है। मेरा और मेरे परिवार की ओर से स्वामी दयानन्द सरस्वती को शत्-शत् नमन।

**- पृथ्वी सिंह, इन्दौर**

इस भव्य प्रदर्शनी को देखकर मुझे बहुत ही अच्छा लगा। जीवन में कुछ नया सीखने की प्रेरणा मिली। मुझे कैंसर है, मैं बहुत नर्वस हो चुकी थी। लेकिन अब जो जिन्दगी बची है उसे खुल के जिऊँगी। बहुत-बहुत धन्यवाद।

**- अन्नी सैनी**

प्रेरणा

# फौलादी इरादे

"... accident. It led to 4 surgerie... in my body... truly aware that life is unpredictable."

– रुद्राक्ष रक्षित

मौत का सामना करा देनेवाली दुर्घटनाओं से गुजरना हमेशा ही एक बुरे सपने की तरह होता है। बिनय कुमार, एक पूर्व नेवी ऑफिसर ने भी ऐसी ही एक दुर्घटना का सामना किया, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और अपने इसी शानदार जज्बे के चलते अब वो वापसी को तैयार हैं।

बिनय कुमार मूल रूप से कटक, उड़ीसा के रहने वाले हैं, उन्होंने भारत के विभिन्न राज्यों व पहाड़ी शृंखलाओं में अपनी मोटरसाइकिल से भ्रमण किया है। उन्होंने भारतीय नेवी में अपनी सेवाएँ दी हैं, साथ ही वे एक पेशेवर बाइकर भी हैं, जिनके पास पूरे भारत में मोटरसाइकिल भ्रमण का परमिट भी है, पर एक दुर्घटना से उनकी जिन्दगी में सब कुछ बदल गया।

बिनय कुमार महाराष्ट्र के पहाड़ी इलाके में चार मोटर साइकिलिस्ट्स के समूह की अगुवाई कर रहे थे। मौसम सुहाना था, बिनय और उनके साथी इस अनुभव का आनन्द ले रहे थे। तभी अचानक कुछ अप्रत्याशित हुआ। एक बस तेजगति से उनकी तरफ आ रही थी। पहाड़ी इलाकों में सँकरे रास्ते होने की वजह से बिनय ज्यादा कुछ नहीं कर सकते थे। शायद बस चालक उन्हें देख नहीं पाया था। बचाने के प्रयास में बिनय व साथी सड़क के कोने की तरफ भी गए लेकिन बस चालक ने तेजी से उनकी तरफ बढ़ते हुए, बिनय को टक्कर मार दी।

**"४ सर्जरी और ५०० स्टिचस के बाद भी, ये प्रेरक नेवी ऑफिसर हैं वापसी को तैयार"**

उनके सिर में भारी चोट लगी थी। हालाँकि उन्होंने ४८ घंटे के अस्पताल के सफर में पूरी तरह से होश नहीं खोया था, उन्हें याद है उनके दोस्त ने एम्बुलेन्स बुलाई थी, फिर एक चिकित्सा-कर्मी से मदद लेकर उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया था। उनके साथियों ने उनके माता-पिता को सूचना भी दे दी। जो बाद में अस्पताल पहुँच गए थे। दुर्घटना के बाद के कुछ महीने बिनय कुमार के जीवन का सबसे मुश्किल समय था, पर इसी दौरान उनके जीवन में कुछ बहुत अर्थपूर्ण घटा।

सर्जरी और कई बार चिकित्सकों को दिखाने के बाद भी दुर्घटना के दो महीने बाद तक बिनय व्हीलचेयर तक ही सीमित थे। उनकी चार सर्जरी हुईं थीं जिसमें उनके घुटनों में ७ स्क्रू डाले गए थे और हाथ में तो प्लेट्स लगाई गईं थी। उनके पैर में कई फ्रेक्चर्स हुए थे व कई लिगामेंट्स को क्षति पहुँचने की वजह से इस पूरी प्रक्रिया में उन्हें तकरीबन ५०० टाँके लगे थे। कुछ सप्ताह तक वे खाना भी नहीं निगल सकते थे। दर्द इतना ज्यादा था कि वे सो नहीं पाते थे और जागने पर भी उन्हें असहनीय दर्द का सामना करना पड़ता था। इसके चलते वे अंदर से टूटने लगे थे। उनके माता-पिता भी इस बात से बहुत परेशान थे कि शायद उनका बच्चा अब कभी अपने पैरों पर हमेशा की तरह चल नहीं पाएगा।

बिनय कुमार थे तो मजबूत इरादों वाले, उन्हें यह पता था कि अगर वे कमजोर हुए तो उनके माता-पिता जो पहले ही काफी परेशान थे, अपना हौसला खो देंगे। उन्होंने इस कठिन परिस्थिति में भी अपने आपको मुस्कुराने के लिए मनाया व अपने माता-पिता को हौसला बँधाया कि वे ठीक हैं। उन्होंने अपने माता-पिता को यह अहसास दिलाया कि यह दुर्घटना जीवन का एक समय है जो गुजर जाएगा।

बिनय एक घटना को याद करते हुए बताते हैं, जब उनकी माँ की आँखों में आँसू थे और उन्होंने पूछा, 'यह सिर्फ तुम्हारे साथ ही क्यों हुआ, जबकि बाहर संसार में इतने लोग मोटरसाइकिल चला रहे हैं? तुम ही क्यों?' उनके पास इसका कोई जवाब नहीं था, पर उन्होंने अपने आपको सँभालते हुए जवाब दिया, 'क्योंकि शायद सिर्फ मुझमें ही इतनी हिम्मत है कि मैं यह सब झेल सकता हूँ।'

समय के साथ उनके घाव भरने लगे, दर्द भी धीरे-धीरे कम होने लगा। उनके दोस्त व परिवार के सदस्य इस घड़ी में हमेशा उनके साथ खड़े रहे। इतने बड़े हादसे से गुजरने के बाद आज बिनय के पास हम सब के लिए एक संदेश है, **'हमारा जीवन क्षणभंगुर है, यहाँ कभी भी, कुछ भी घटित हो सकता है, मृत्यु कभी भी आ सकती है बिना कोई चेतावनी दिए। हमें हर मिलने वाले क्षण की महत्ता समझनी चाहिए। जो समय आप अपनों के साथ बिता रहे हैं वो समय मूल्यवान है।'**

आज बिनय हादसे से काफी हद तक उबर चुके हैं और आज विलहेमसनशिप मेनेजमेंट में नेविगेशन ऑफिसर हैं।

वे पूरी तरह से स्वस्थ होने के लिए रोजाना व्यायाम करते हैं, पूरी तरह से स्वस्थ होने पर वे दुबारा नेवी ज्वाइन करने का इरादा रखते हैं।

बिनय सच में एक प्रेरणा हैं, एक घातक दुर्घटना से वापसी कर और मजबूत बनने का उदाहरण। उनकी इस स्थिति के बाद भी उनके वापस नेवी में अपनी सेवाएँ देनी की इच्छा यह साबित करती है कि हार कर बैठ जाना किसी समस्या का हल नहीं होता।

### गाय के गोबर से इंडोनेशिया की दो छात्राओं ने Air Freshener बनाया

जी हाँ ये सत्य है। इंडोनेशिया की छात्रा डवि व मिकी ने गाय के ताजा गोबर का पहले तीन दिन Fermentation किया, फिर उस को छान कर उस का पानी अलग कर लिया। उस पानी में उन्होंने नारियल पानी मिला दिया तथा सभी प्रकार की अशुद्धियों को दूर करने के लिये इस का Distillation किया। लो जी हो गया एकदम प्राकृतिक Air Freshener तैयार।

जो Distilled द्रव्य था वो पेड़ पौधों व फूलों जैसी ताजगी लिये था। दोस्तो आप को तो पता ही है कि बाजार में मिलने वाले Air Freshener में खतरनाक रसायन होते हैं तथा वो अस्थमा व अन्य फेफड़ो की बीमारियों को जन्म देते हैं। इस प्राकृतिक Air Freshener की कीमत भी अन्य बाजार में उपलब्ध उत्पादों के मुकाबले बहुत कम है, १०० मिली लीटर की लगभग ७०/- मात्र तथा सेहत के लिये एकदम सुरक्षित।

**है ना कमाल की खबर ?**

मित्रों अगर स्वस्थ्य रहना है तो हानिकारक रसायनों को छोड़ना ही होगा व प्रकृति की शरण में जाना ही होगा, यही एक मात्र विकल्प है।

**गोबर के गुण गाता, गौ मैया के जयकारे लगाता।**

### नवलखा महल, उदयपुर, टूरिस्ट मानचित्र में सम्मिलित

राजस्थान सरकार के पर्यटन विभाग के नवीनतम प्रकाशन में जिसमें

कि लेकसिटी उदयपुर के सभी दर्शनीय स्थलों का विवरण दिया हुआ है। उसमें नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर को स्थान प्रदान करते हुए दर्शनीय स्थल के रूप में परिगणित करते हुए उल्लेख किया गया है। इसमें दिए हुए मानचित्र में भी इसको रेखांकित किया गया है। सभी संबंधित सहायक व अधिकारियों का न्यास की ओर से आभार।

### आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री सम्मानित

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति ने महात्मा हंसराज जयन्ती के अवसर पर जयपुर (राजस्थान) में आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को वैदिक विद्वान् के रूप में समिति के यशस्वी प्रधान डॉ. पूनमसूरी जी ने सम्मानित किया।

सम्मान रूप में उन्हें शॉल, प्रशस्तिपत्र, तुलसी का पौधा एवं ३१ हजार रुपये की मानराशि प्रदान की गई। समारोह में हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी एवं पूर्व राज्यपाल श्री टी. एन. चतुर्वेदी ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। वैदिक विद्वान् एवं अध्यात्मपथ के सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को यह सम्मान उनके विपुल लेखन एवं देश-विदेश में वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार के लिए प्रदान किया गया।

**- डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया**

## प्रतिस्वर

आदरणीय सम्पादक महोदय,

सादर नमस्ते, आपके द्वारा भेजा गया शिक्षाप्रद/आध्यात्मिक मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का मार्च २०१७ का अंक मिला, धन्यवाद।

वेदसुधा में लेख 'परमजातवेदा मुझे श्रद्धा और मेधा देवे' गुरु से ज्ञान प्राप्त करने के लिये शब्द को उसके अनुरूप ढालने के ज्ञान देनेवाला था। अशोक आर्य का लेख सुधारों का सर्वव्यापी स्वागत हो, जानकारी बढ़ाने वाला है। शिव नारायण उपाध्याय का लेख यजुर्वेद में पशुपालन जानकारी देने वाला था। मिथिलेश कुमार सिंह का लेख महिला अधिकार उपयोगी रहा। टंकराश्री अरुणा सतीजा का लेख दलित कौन? जानकारी बढ़ाने वाला था। लेख यजुर्वेद और स्वास्थ्य उपयोगी रहा। पत्रिका के इस अंक की अन्य रचनायें भी इसे काबिले तारीफ बनाने वाली थी।

**- प्रो. श्यामलाल कौशल, रोहतक, हरियाणा**

### सार्वदेशिक वीरांगना दल के तत्वावधान में शिविर का आयोजन

राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्म रक्षण शिविर का आयोजन दिनांक २८ मई से ४ जून २०१७ तक भगवती आर्ष कन्या गुरुकुल (रेवाड़ी) महाविद्यालय, ग्राम जसात, तहसील पटौदी गुरुग्राम में किया जा रहा है। कन्याओं में शारीरिक आत्मिक, नैतिक बल एवं वैदिक सिद्धान्तों, संस्कारों का प्रशिक्षण देकर उन्हें राष्ट्र, समाज व परिवार के निर्माण में अहम भूमिका निभाने हेतु तैयार करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष इन शिविरों का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष शिविर शुल्क तीन सौ रु. प्रति शिविरार्थी होगा। शिविर का उद्घाटन २८ मई सायं ५.०० बजे व समापन दिनांक ४ जून रविवार प्रातः १०.०० से १.०० बजे होगा।

**- मृदुला चौहान, संचालिका**

### सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०४/१७ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०४/१७** के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), किरण आर्या; कोटा (राज.), श्री इन्द्रजित देव; यमुनानगर (हरियाणा), श्री अच्च्युता हरकाल; अहमदनगर (महाराष्ट्र), श्री बीरेन्द्र कर; शिशुपालगढ़ (भुवनेश्वर), श्री रमेश चन्द्र प्रियदर्शन; सीतामढी (बिहार), श्री पुरूषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्री सत्यनारायण तोलम्बिया; भीलवाड़ा (राज.), श्री धर्मवीर आसेरी; बीकानेर (राज.), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री संजय आर्य; नाहरी (सोनीपत), श्रीमती परमजीत कौर, नई दिल्ली। **सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।**

**ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ २० पर अवश्य पढ़ें।**

**भूल सुधार- मई २०१७ की पत्रिका में सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ११/१६ के विजेता के स्थान पर सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०३/१७ के विजेता पढ़ें। वैसे ही सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ११/१६ के चयनित विजेता के स्थान पर सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०३/१७ के चयनित विजेता पढ़ें।**

# समाचार

## वैदिक विधि से पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न

उदयपुर में हाल ही में एक बुद्धिजीवी परिवार में श्री शरद भारती जी की बिटिया का विवाह संस्कार वैदिक रीति से आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय द्वारा सम्पन्न करवाया गया। विवाह संस्कारस्थ मंत्रों की सरस व धाराप्रवाह व्याख्या सुनकर सभी उपस्थित नर नारी अत्यन्त प्रभावित हुए और उनका एक ही मत था कि अगर विवाह संस्कार इस प्रकार से वर-वधू को सारी प्रक्रिया गृहस्थाश्रम का महत्व और उसमें सफल होने का उपाय बताते हुए किये जायें तो आज जिस प्रकार से परिवार टूट रहे हैं उन पर काफी हद तक रोक लग सकती है।

- नवनीत आर्य, नवलखा महल

## वैदिक संस्कार शिविर का आयोजन

आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर में बच्चों के अन्दर वैदिक संस्कारों के सम्प्रेषण हेतु इस शिविर का आयोजन २८ मई से ४ जून २०१७ तक किया जा रहा है। इसमें विशेष रूप से आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य वेदप्रिय शास्त्री, केलवाड़ा को आमंत्रित किया गया है।

- ललिता मेहरा, मंत्री, आर्य समाज, हिरणमगरी

## स्वामी सुमेधानन्द जयन्ती मनायी गयी

दयानन्द मठ, चम्बा के तत्वावधान में ३ से ५ मई २०१७ तक पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज की जयन्ती के उपलक्ष्य में विशेष यज्ञ व उत्सव का आयोजन किया गया। जिसमें पूज्य स्वामी आर्यवेश जी स्वामी सदानन्द जी दीनानगर, स्वामी सवितानन्द जी, राँची, स्वामी संतोषानन्द जी, आचार्य रामानन्द जी, शिमला आदि अनेक प्रेरक व्यक्तित्वों ने भाग लेकर समुपस्थित श्रोताओं को प्रेरक उद्‌बोधन प्रदान किए।

- आचार्य महावीर सिंह

## डॉ. पूर्णसिंह डबास पुस्तक लेखन हेतु सम्मानित

नई दिल्ली, २ दिसंबर, २०१६ को डॉ. पूर्णसिंह डबास द्वारा लिखित और भारत सरकार के आर्थिक अनुदान से मुद्रित 'भारतीय सैन्य शब्दों की रोचक कहानियाँ' नामक पुस्तक का लोकार्पण एंव विवेचन समारोह सम्पन्न हुआ। समारोह का आयोजन अरावली फाउण्डेशन फोर एजुकेशन, अनन्य प्रकाशन तथा महाराजा सूरजमल प्रौद्योगिकी संस्थान के सौजन्य से संस्थान के प्रांगण में किया गया।

इस अवसर पर पूर्व डीन ऑफ कॉलेज डॉ. एस. एस. राणा (जिनको यह पुस्तक समर्पित की गई है), प्रो. नित्यानन्द तिवारी, श्री सुधीर सक्सेना (सम्पादक 'दुनिया-इन दिनों'), प्रो. अजय तिवारी, डॉ.नरेन्द्र शुक्ल, सूरजमल स्मारक शिक्षा समिति के अध्यक्ष श्री एस. पी. सिंह ने पुस्तक का लोकार्पण करते हुए इस के विषय में अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यवाही का संचालन युवा समीक्षक श्री आशीष मिश्र ने किया। कार्यक्रम में भाग लेने आए प्रबुद्ध श्रोताओं और विभिन्न विषयों के विद्वानों से संस्थान का सेमिनार हॉल खचाखच भरा हुआ था।

यह सुखद संयोग ही कहा जाएगा कि इस कार्यक्रम के तय हो जाने के बाद डॉ. डबास की तीन और पुस्तकें- 'हिंदी में देसज शब्द ' (शब्द कोष), 'चरण धूलि इंटर नेशनल' तथा 'मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ (दोनों हास्य-व्यंग्य) भी छप कर आ गई । परिणामतः इसी दिन एक के स्थान पर चार पुस्तकों का लोकार्पण किया गया।

**शोक समाचार**

## आर्यसमाज काकड़वाड़ी, मुम्बई के योग्य पुरोहित युवा विद्वान् श्री चन्द्रपाल शास्त्री का असामयिक निधन

विश्व की प्रथम आर्य समाज काकड़वाड़ी, मुम्बई के सुयोग्य पुरोहित गुरुकुल एटा के स्नातक युवा विद्वान् श्री चन्द्रपाल शास्त्री जी का गत दिनों हृदयगति रूक जाने से असामयिक निधन हो गया। उनके निधन से न केवल आर्य समाज मुम्बई किन्तु सम्पूर्ण आर्य जगत् को अत्यधिक दुःख पहुँचा है। श्री चन्द्रपाल शास्त्री जी की आयु लगभग ४५ वर्ष की थी। बड़े ही हँसमुख, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं वैदिक सिद्धान्तों को समर्पित शास्त्री जी का आर्य समाज के लिए योगदान सदैव स्मरण किया जायेगा। सत्यार्थ सौरभ व न्यास परिवार दिवंगत आत्मा को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित करता है।

## डॉ. रमेश गुप्ता को पितृशोक

आर्य प्रतिनिधि सभा, अमेरिका के पूर्व प्रधान डॉ. रमेश गुप्ता जी के

पूज्य पिता श्री मदनलाल मंगल जी का निधन २६ अप्रैल २०१७ को ६५ वर्ष की आयु में उनके पैतृक निवास छबड़ा जिला बारां, राजस्थान में हो गया। उनका अंतिम संस्कार 'संस्कार विधि' में निर्देशित विधि का पूर्णतः पालन करते हुए किया गया तथा पिताजी की अस्थियाँ भूमि को अर्पित करते हुए उन पर पौधारोपण किया गया। इस अवसर पर आयोजित शांति यज्ञ व श्रद्धांजलि सभा में अनेक गणमान्य लोग जिसमें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य शामिल थें उपस्थित हुए।

न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें एवं शोक संतप्त परिजनों को इस वियोगजन्य दुःख को सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

- अशोक आर्य

## सेठ प्रताप सिंह सूरजी वल्लभदास जी का निधन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान सेठ प्रताप सिंह सूरजी वल्लभदास जी का दिनांक ६ मई को उनके मुम्बई निवास पर ९८ वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे आर्यसमाज की सर्वोच्च शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्ष १९६३ से १९७० तक यशस्वी प्रधान रहे। आपके नेतृत्व में मॉरीशस में आयोजित १२वाँ अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन आयोजित किया गया था।

न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें एवं शोक संतप्त परिजनों को इस वियोगजन्य दुःख को सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

- अशोक आर्य

# अनासक्ति

## कथा सरित

जब मैं बच्चा था, मैंने दो बौद्ध भिक्षुओं की एक कहानी सुनी थी, जो बाढ़ में डूबे एक इलाके से गुजर रहे थे। बौद्ध भिक्षु सख्त व्रतों से भरा जीवन जीते हैं, जिनमें से एक है ब्रह्मचर्य। इनके समाज में उन्हें औरत को छूने की भी इजाजत नहीं है।

जब बाढ़ग्रस्त क्षेत्र से निकलते ये दोनों भिक्षु एक मोड़ के दूसरी तरफ पहुँचे, तो बाढ़ में फंसी एक प्यारी सी सुन्दर बाला को उन्होंने देखा। पानी अभी भी चढ़ रहा था, क्योंकि चारों ओर मूसलाधार बारिश हो रही थी।

'यहाँ आ बच्ची, बड़े भिक्षु ने कहा 'मेरी पीठ पर चढ़ जा' मैं तुझे पार ले चलूँगा'

युवा भिक्षु चौंक गया, लेकिन चुप रहा।

'मुझे सब्र सिखाता है,' उसने सोचा, 'लेकिन पहला मौका आया, तो खुद को रोक नहीं सका। अपने लिए एक कानून, दूसरों के लिए दूसरा। कैसा पाखण्डी है!'

बड़े भिक्षु ने लड़की को अपनी पीठ पर उठा लिया और आगे बढ़ चला। उनके पीछे चुपचाप चलते, युवा खुद को सोचने से रोक नहीं सका, 'मुझसे उसे उठाने को कह सकता था। मैं ज्यादा जवान और ताकतवर हूँ। क्यों नहीं कहा? उसे छूने को इतना बेताब हो रहा था।'

रह-रह कर उसे लड़की की खूबसूरती भी नजर आती। वो जितना देखता और सोचता, उतना अपराध भाव और हिकारत के बीच घिर जाता, 'वो तो सिर्फ उसकी मदद करने की कोशिश कर रहा है। अपने उदाहरण से मेरा मार्गदर्शन करने की कोशिश कर रहा है। उफ, मैं ऐसा क्यों महसूस कर रहा हूँ? अपने गुरु पर इस तरह अविश्वास कैसे कर सकता हूँ मैं?' चुपचाप, भिक्षु बाढ़-पीड़ित मैदान पार करते रहे। युवा भिक्षु अपने सवालों और ख्यालों में उबलता रहा। क्रोध ने विवेक को हरा दिया।

'क्या ये धम्म (धर्म) है?' वह कुढ़ता सोचता रहा। 'कोई आश्चर्य नहीं कि हमें स्त्री से दूर रहने को कहा जाता है। देख लो, अपने स्पर्श मात्र से वह उसका कैसा हाल कर रही है। और बिना छुए, मेरी कैसी गत बना रही है'

जब वे आखिरकार ऊँची जमीन पर सुरक्षित पहुँच गए, तो बड़े ने लड़की को नीचे उतार दिया। लड़की अपने रास्ते चली गई। मठ तक पहुँचते-पहुँचते छोटा जर्द पड़ चुका था, लेकिन उसने अपनी जुबान पर काबू रखा। बूढ़ा हँसी-खुशी अपने काम निपटाता रहा, लेकिन युवा का ध्यान काम में बिलकुल न लगा।

रात हुई और भिक्षु सोने चले गए। वृद्ध भिक्षु शांति से खर्राटे भर रहा था। युवा, जो उसकी बगल में लेटा जाग रहा था, करवटें बदल रहा था। आधी रात के बाद युवा भिक्षु खुद को और नहीं रोक पाया। सोते भिक्षु को झकझोर कर उसने माँग की, 'सफाई दो अपनी!'

क्या? वृद्ध चौंक कर नींद से उठ बैठा। 'कैसी सफाई?' महिला! युवा ने हाँफते हुए इल्जाम लगाया।

कौन महिला? 'अभी-भी अधसोए बूढ़े ने, नींद के नशे में पूछा'

'आपको याद तक नहीं?' छोटा बिफर उठा- 'वो प्यारी-सी युवती जिसे आप अपनी पीठ पर लिए-लिए फिरे। हमें तो औरतों को छूने तक की इजाजत नहीं, उठा कर घूमना तो दूर की बात है। आपने उसे उठाया क्यों?'

'ओह वो!' वृद्ध ने निढ़ाल होकर जवाब दिया- 'मैं तो उसे वहीं पीछे छोड़ आया। तुम क्यों उसे अभी तक लिए-लिए फिर रहे हो?'

वस्तुतः बड़ा तो केवल डरी, असहाय लड़की को सुरक्षा तक ले गया था, लेकिन युवा भिक्षु तो उसे यहाँ मठ तक ले आया। वह यह नहीं समझ पाया कि जो कार्य केवल कर्त्तव्यवशात् अनासक्त भाव से किए जाते हैं उनके वासनात्मक संस्कार मन में नहीं रुकते।

❑❑❑

साभार- अन्तर्जाल

# लाल टमाटर के जबर्दस्त फायदे

शरीर को निरोग रखने और शक्ति प्रदान करने के लिए टमाटर का सेवन लाभदायक है। टमाटर पौष्टिकता के साथ-साथ शरीर में विटामिन की कमी को पूरा करता है। यह सौंदर्य एवं खूबसूरती भी प्रदान करता है।

यह मनुष्य के लिए प्रकृति का वरदान है, जिसके जरिए मानव कई बीमारियों से ठीक हो सकता है। टमाटर में विटामिन ई की भरपूर मात्रा होती है, जो सेहत के साथ सौंदर्य के आकर्षण को भी बढ़ाती है। टमाटर प्राकृतिक गुणों जैसे आयरन, साइट्रिक अम्ल से भरपूर होता है, जो गर्भवती महिलाओं के लिए उपयोगी होता है साथ ही विटामिन बी की वजह से भी इसका सेवन गर्भवती महिलाओं को फायदा करता है, क्योंकि यह खून की कमी को दूर करता है। टमाटर का सेवन डायबिटीज के मरीजों के लिए उपयोगी है।

**कब्ज**- कब्ज से परेशान लोगों के लिए टमाटर का सेवन करना फायदा करता है। यदि आपको कब्ज है तो आप टमाटर के सूप का सेवन करते रहें, यह आपकी पुरानी से पुरानी कब्ज को दूर कर देगा। यदि आपको प्यास ज्यादा लगती हो और आपकी बार-बार पानी पीने से भी प्यास न बुझ रही हो तो आप लौंग का चूर्ण और शक्कर को टमाटर के रस में डालकर सेवन करें आपको इस समस्या से मुक्ति मिलेगी।

**मसूड़ों की समस्या**- मसूड़ों से खून निकलता हो तो आप कच्चे टमाटर खाएँ या फिर टमाटर का रस बनाकर उसका सेवन करें। ऐसा करने से मसूड़ों से खून निकलने वाली समस्या दूर हो जाती है। यदि मुँह के छाले की समस्या से परेशान हों तो पानी में टमाटर के रस को डालकर कुल्ला करें, आपको मुँह के छालों की समस्या से मुक्ति मिलेगी।

**शरीर कमजोर हो तो**- यदि आपका शरीर कमजोर है या फिर शारीरिक कमजोरी हो तो भी टमाटर का सेवन लाभदायक होता है। १० ग्राम शहद में १०० ग्राम टमाटर का रस डालकर उसे मिला लें और सुबह इसका सेवन करें यह शरीर की कमजोरी को दूर करता है और आपको ऊर्जावान बनाता है।

**हाई ब्लडप्रेशर**- हाई ब्लडप्रेशर की वजह से कई बीमारियों का सामना करना पड़ता है। टमाटर के सेवन के जरिए ही आप हाई ब्लडप्रेशर की बीमारी से निजात पा सकते हो। हाई ब्लडप्रेशर की बीमारी से परेशान लोगों को सलाद के रूप में लाल रंग वाले टमाटर का सेवन अधिक से अधिक करना चाहिए।

**सौंदर्य निखार** लाने में टमाटर की आयुर्वेदिक भूमिका क्या है यह जानना जरूरी है-

यदि आँखों के नीचे डार्क सर्कल्स हों तो आप टमाटर के रस में थोड़ा गाजर का रस मिलाकर आँखों के नीचे डार्क सर्कल्स पर लगाएँ। यह आँख के नीचे पड़े काले धब्बों को दूर करता है। यदि आपकी त्वचा में दाग या धब्बे हों तो मूली के रस में टमाटर का रस मिलाकर चेहरे पर लगाने से चेहरे से दाग धब्बे दूर हो जाते हैं। टमाटर के रस को चेहरे पर प्रतिदिन लगाने से चेहरे का रंग निखरता है और चेहरा कान्तिमान बनता है।

**पथरी में सहायक**- टमाटर का सेवन यदि आप उसके बीजों को निकाल कर करते हो तो इससे पित्त और गुर्दे में बनने वाली पथरी खत्म होने लगती है या वह बढ़नी रुक जाती है।

**कैंसर से बचाए**- टमाटर शरीर को कई तरह के कैंसर से बचाता है। जैसे पेट, मुँह, गर्भाशय, प्रोस्टेट और गले संबंधी कैंसर को बढ़ने नहीं देता है। जिस वजह से कैंसर का खतरा कम हो जाता है।

**हड्डियों की मजबूती के लिए**- विटामिन और कैल्शियम ही इंसान की हड्डियों को मजबूत बनाते हैं। ये दोनों तत्व टमाटर में होते हैं। जिन लोगों की हड्डियाँ कमजोर हैं वे टमाटर का सेवन जरूर करें। आपको फायदा मिलेगा।

❑❑❑

**लेखिका - मधु अरोड़ा**

## कर्म योगी आनन्द कुमार आर्य ने मो.इरफान अंसारी के साथ किया भूमि क्रय का इकरारनामा

दानदाताओं के लिए पुण्यार्जन का सुनहरा अवसर

स्वामी दयानन्द सरस्वती वेद पढ़ने का अधिकार, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा स्त्रियों आदि को देते हैं। इस सम्बन्ध में यजुर्वेद का मंत्र 'यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः' का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। स्वामी दयानन्द के समस्त सिद्धान्तों में वेद सर्वोपरि हैं। पं. युधिष्ठिर मीमांसक का कहना है कि 'स्वामी दयानन्द' के समस्त साहित्य में या कार्यों में 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' तथा वेदभाष्य का कार्य सर्वश्रेष्ठ है। यहाँ तक कि 'सत्यार्थ प्रकाश' से भी अधिक महत्व वेदभाष्य का है।'

स्वामी दयानन्द ने भी अपने आर्य समाज के दस नियमों में लिखा है- 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।'

पं. युधिष्ठर मीमांसक जी ने अपने १६४६ ई. में प्रकाशित 'ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का इतिहास' में पृ. ६६ पर लिखा- 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका ग्रन्थ की रचना की। यह भूमिका चारों वेदों के करिष्माण भाष्यों की है, यह इसके नाम से प्रगट है। यजुर्वेद भाष्य में ऋषि ने लिखा है-'और सब विषय भूमिका में प्रकट कर दिया, वहाँ देख लेना। क्योंकि उक्त भूमिका चारों वेदों की एक ही है।' (यजुर्वेद भाष्य पृ.८)। **ऋषि ने जिस समय भूमिका का प्रारम्भ किया उस समय वे अयोध्या नगर में विराजमान थे।** प. देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय द्वारा संग्रहीत जीवन चरित्र में पृ. ३७५ पर लिखा है-

'भाद्र कृष्ण १४ सं. १६३३ वि. अर्थात् १८ अगस्त सन् १८७६ को स्वामी जी अयोध्या पहुँचकर सरयूबाग में चौधरी गुरुचरण लाल के मन्दिर में उतरे। अयोध्या में भाद्र शुक्ल प्रतिपदा सं. १६३३ अर्थात् **२० अगस्त सन् १८७६ को ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का लिखना प्रारम्भ हुआ।'** इसी प्रकार आर्य समाज नयाबांस दिल्ली से प्रकाशित पं. लेखराम कृत महर्षि दयानन्द जीवन चरित्र में भी यही लिखा है। ऋषि ने मार्गशीर्ष शु. १५ सं. १६३३ वि. को स्वकीय वेदभाष्य के प्रचारार्थ एक विज्ञापन प्रकाशित किया था- 'सम्वत् १६३३ वि. मार्गशीर्ष शुक्ला पूर्णमासी (१ दिसम्बर, १८७६) पर्यन्त दश हजार श्लोकों (का) प्रमाण भाष्य बन गया है।' इस प्रकार स्वामी जी ने २० अगस्त १८७६ से लिखना प्रारम्भ किया और १ दिसम्बर १८७६ को ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका पूरी की।

आर्य समाज टाण्डा-अम्बेडकरनगर का शताब्दोत्तर रजत जयन्ती समारोह १० नवम्बर से १४ नवम्बर २०१६ को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाया गया। इस समारोह के 'लोगो' में अयोध्या का वर्णन देखकर राजस्थान के माननीय लोकायुक्त आर्य न्यायमूर्ति श्री सज्जन सिंह कोठारी सपत्नीक सरयूबाग गये और उन्होंने टाण्डा आकर उस स्थान को खरीदकर स्मारक बनाने की बात कही।

सरयूबाग स्थित गुरुचरण लाल के वंशज रहते हैं। उनके मन्दिर के ठीक सामने संयोग से भूमि विक्रय हेतु आबादी (धारा १४३) के अन्तर्गत मो. इरफान अंसारी की है। इस भूमि के पास एक गर्ल्स डिग्री कॉलेज तथा दो इण्टर कालेज संचालित हैं। मेडिकल कालेज का बनना प्रस्तावित है। यह परिक्रमा पथ के साथ संलग्न स्थित है। श्री अंसारी जी के साथ श्री आनन्द कुमार आर्य, पं. दीनानाथ शास्त्री (अमेठी), डॉ. नागेन्द्र कुमार शास्त्री (गुरुकुल अयोध्या), श्री हिमांशु त्रिपाठी (प्रधान, आर्यसमाज फैजाबाद), परशुराम पाण्डेय (सरयूबाग, अयोध्या), आनन्द कुमार चौधरी एडवोकेट (लखनऊ), आदि ने निगोशिएसन के उपरान्त तीस हजार (३०,०००) वर्गफुट जमीन क्रय हेतु मूल्य का निर्धारण किया जो वास्तविक मूल्य से काफी कम पर मिल रही है। १ करोड़ १२ लाख भूमि का मूल्य+रजिस्ट्री तथा बाउण्ड्रीवाल एवं कार्यालय निर्माणार्थ प्रथम दृष्टया डेढ़ करोड़ रुपये की आवश्यकता है।

आर्यजनो! सरयूबाग अयोध्या की यह भूमि ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य की जन्मभूमि है। ऋषि से सम्बन्धित समस्त स्थलों से अधिक महत्व की है। न जाने अभी तक किसी आर्य मनीषी की दृष्टि यहाँ क्यों नहीं पड़ी? यदि इस समय क्रय नहीं किया जाता है तो भविष्य में भूमि नहीं मिल पायेगी तथा आने वाला इतिहास वर्तमान सभी आर्यों को माफ नहीं करेगा।

इस भूमि के क्रय हेतु मो. इरफान अंसारी के साथ गुरुकुल अयोध्या में ऋषि दयानन्द जन्म दिवस के अवसर पर दि. ११ फरवरी, २०१७ को एग्रीमेंट श्री आनन्द कुमार आर्य ने एक लाख एक हजार रुपये देकर पं. दीनानाथ शास्त्री, नागेन्द्र शास्त्री, हिमांशु त्रिपाठी एडवोकेट, सत्यप्रकाश आर्य भजनोपदेशक (बाराबंकी), की उपस्थिति में कराया है।

अस्तु, यह जहाँ मर्यादा पुरुषोत्तम आर्य राम की जन्मभूमि है वहीं सरयूबाग अयोध्या ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य की जन्मभूमि है। आइए, हम सभी देश-विदेश के दानी आर्यजन इस महती कार्य में अधिक से अधिक 'शतहस्त समाहर सहस्र हस्त संकिर' की पवित्र भावना से दान देकर १.५ करोड़ की प्रारम्भिक राशि की यथाशीघ्र पूर्ति करें और यश के भागी बनें।

# सरयूबाग अयोध्या में बनेगा ऋग्वेदादिभाष्य स्मारक

आनन्द कुमार आर्य

**-सम्पर्क सूत्र-**
**आनन्द कुमार आर्य, प्रबन्धक**
**डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, अम्बेडकरनगर**
चलभाष- ०९३३१८६६६१८, Email: anandkumararya75@gmail.com

# राजकोष-प्रबन्धन

महर्षि ने ठीक ही लिखा है कि जिस प्रकार बगुला ध्यानावस्थित हो मछली पकड़ने का प्रयास करता है, ठीक उसी प्रकार राजा (प्रशासन) को भी कर ग्रहण प्रणाली द्वारा राज कोष में अर्थ संग्रह का प्रयत्न करना चाहिए। आधुनिक संदर्भ में राज कोष हेतु अर्थ संग्रह का प्रधान साधन वाणिज्य कर, व्यवसाय कर व आयकर हैं। महर्षि ने एतदर्थ निम्नानुसार नीति का निर्धारण किया है:-

**यथा फलेन युज्येत राजा कर्त्ता च कर्मणाम्।**
**तथाऽवेक्ष्य नृपो राष्ट्रे कल्पयेत्सततं करान्।।**
**यथाऽल्पाऽल्पमदन्त्याद्यं वार्य्योकोवत्सषट्पदाः।**
**तथाऽल्पाऽल्पो ग्रहीतव्यो राष्ट्राद्राज्ञाब्दिकः करः।।**
**नोच्छिन्द्यादात्मनो मूलं परेषां चातितृष्णया।**
**उच्छिन्दन्ह्यात्मनो मूलमात्मानं ताँश्च पीडयेत्।।**

– मनु.७/१२८,१२९, १३९

अर्थात् जैसे राजा और कर्मों का कर्त्ता राज पुरुष व प्रजाजन सुखरूप फल से युक्त होवें, वैसे विचार करके राजा तथा राजसभा राज्य में कर स्थापना करें।

**“दण्ड का चलाने वाला पक्षपातरहित विद्वान् हो”**

**जैसे जौंक, बछड़ा और भ्रमरा थोड़े-थोड़े भोग्य पदार्थ को**

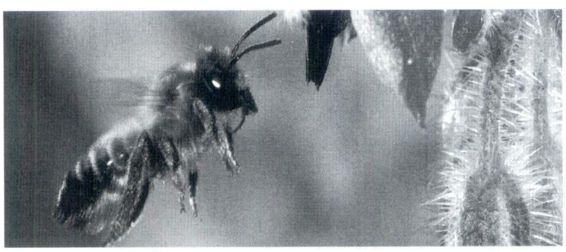

**ग्रहण करते हैं वैसे राजा प्रजा से थोड़ा-थोड़ा वार्षिक कर लेवे**। अतिलोभ से अपने व दूसरों के सुख के मूल को उच्छिन्न अर्थात् नष्ट कदापि न करे, क्योंकि जो व्यवहार और सुख के मूल का छेदन करता है, वह अपने को और उनको पीड़ा ही देता है।

राज कोष में अर्थ संग्रह हेतु महर्षि ने **'सांसारिकमाप्तैश्च'** कहकर आप्त पुरुषों द्वारा वार्षिक कर भुगतान किए जाने का निर्देश दिया है। इस हेतु यह आवश्यक है कि आयकर अधिकारी ईमानदार हों, तथा अप्राप्त कर (कर चोरी) को रोकने हेतु दण्ड व्यवस्था हो।

**न्याय व्यवस्था**- महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने राज्य व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए निष्पक्ष न्याय व्यवस्था का प्रावधान किया है, जिससे छोटे-बड़े सभी को उचित दण्ड एवं न्याय मिल सके। इसके लिए उन्होंने योग्य न्यायाधीशों की नियुक्ति पर बल दिया है तथा यदि राजा या न्यायाधीश भी अपराध करता है तो उसे भी उचित दण्ड देने का आदेश दिया है। यदि राज्य में ठीक न्याय व्यवस्था हो तो वह राज्य सुराज्य बन सकता है। अन्यथा अनाचार एवं दुराचार बढ़ने से समूची राज्य व्यवस्था ही गड़बड़ा जाएेगी। महर्षि द्वारा प्रतिपादित यह कठोर दण्ड व्यवस्था ही राज्य में अनुशासन बना सकती है। वे सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं-

**स राजा पुरुषो दण्डः स नेता शासिता च सः।**
**चतुर्णामाश्रमाणां च धर्मस्य प्रतिभूः स्मृतः।।**
**दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति।**
**दण्डः सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्मं विदुर्बुधाः।।** – मनु. ७-१७, १८

अर्थात् जो दण्ड है वही पुरुष राजा-वही न्याय का प्रचारकर्त्ता, और सबका शासनकर्त्ता, वही चार वर्ण और चार आश्रमों के धर्म का प्रतिभू अर्थात् जामिन है। वही प्रजा का शासनकर्त्ता, सब प्रजा का रक्षक, सोते हुए प्रजास्थ मनुष्यों में जागता है, **इसलिए बुद्धिमान लोग दण्ड ही को 'धर्म' कहते हैं।**

मनुस्मृति में दण्ड के महत्त्व के बारे में लिखा है-

**समीक्ष्य स धृतः सम्यक्सर्वा रञ्जयति प्रजाः।**
**असमीक्ष्य प्रणीतस्तु विनाशयति सर्वतः।।**
**दुष्येयुः सर्ववर्णाश्च भिद्येरन्सर्वसेतवः।**
**सर्वलोकप्रकोपश्च भवेद्दण्डस्य विभ्रमात्।।**
**यत्र श्यामो लोहिताक्षो दण्डश्चरति पापहा।**
**प्रजास्तत्र न मुह्यन्ति नेता चेत्साधु पश्यति।।** – मनु. ७-१९, २४, २५

अर्थात् जो दण्ड अच्छे प्रकार से धारण किया जाए, तो वह सब प्रजा को आनन्दित कर देता है और जो बिना विचारे चलाया जाए, तो सब ओर से राजा का विनाश कर देता है। बिना दण्ड के सब वर्ण दूषित, और सब मर्यादा छिन्न-भिन्न हो जाएँ। दण्ड के यथावत् न होने से सब लोगों का प्रकोप हो जावे। **जहाँ कृष्णवर्ण, रक्तनेत्र, भयंकर पुरुष के समान पापों का नाश करने हारा दण्ड विचरता है, वहाँ प्रजा मोह को प्राप्त न होके आनन्दित होती है, परन्तु दण्ड का चलाने वाला पक्षपातरहित विद्वान् हो।**

❑❑❑

**सम्पादक- अशोक आर्य**

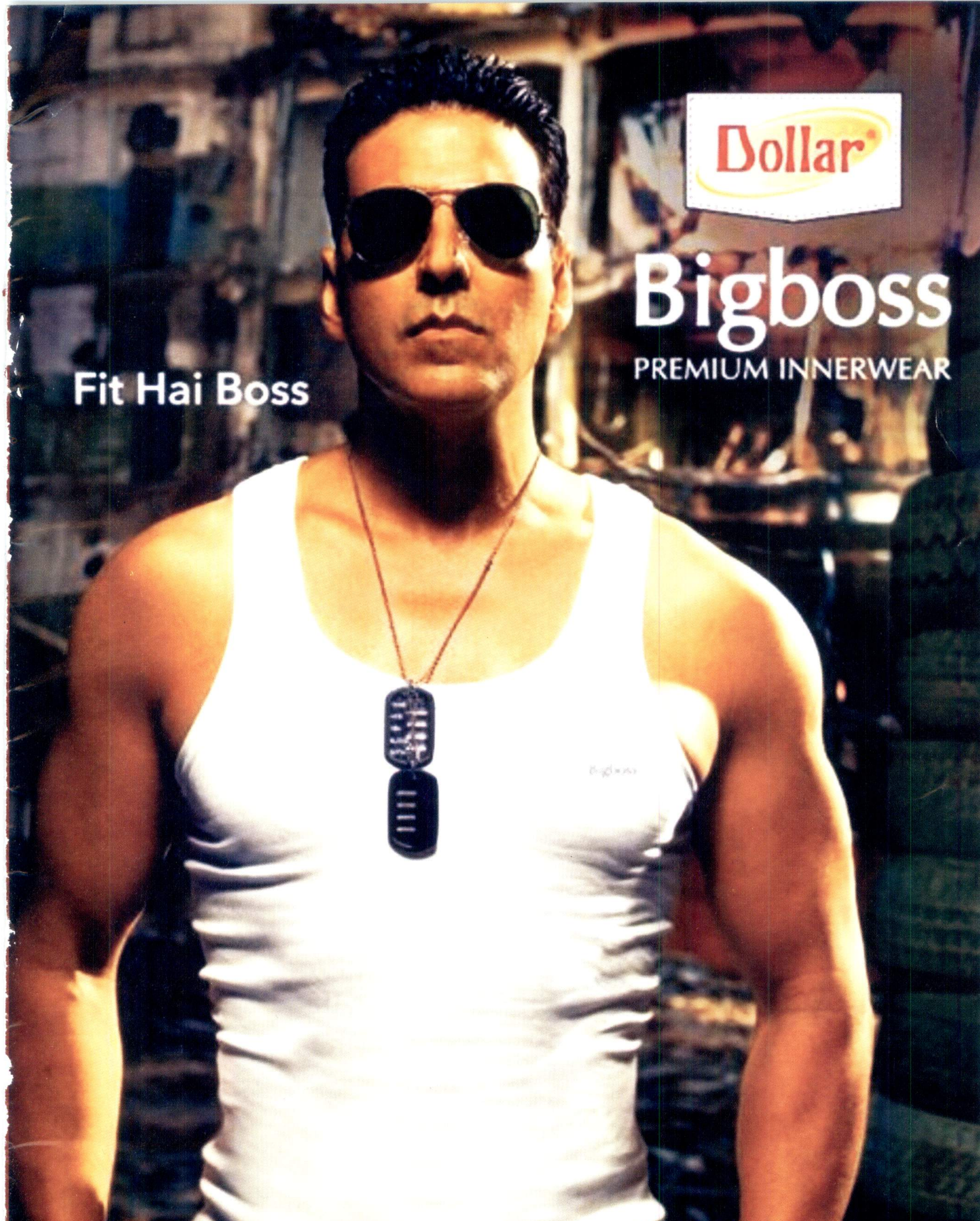
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
www.dollarinternational.com

इसमें राजनियम और जातिनियम होना चाहिये कि पाँचवें अथवा आठवें वर्ष से आगे अपने लड़कों और लड़कियों को घर में न रख सकें। पाठशाला में अवश्य भेज देवें। जो न भेजे वह दण्डनीय हो।

- सत्यार्थप्रकाश पृ. ३८

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
COPL/4782